Page-1_ARO KHABAE PAGE-1.qxd 9/25/2025 6:42 PM Page 1

खबर पेज 2 पर

MOHTA Publishing House

गंभीर समाचार

समय–समाज–संस्कृति

खबर पेज 8 पर

वर्ष -11 | अंक–13 | पाक्षिक समाचार पत्रिका | कोलकाता, मंगलवार 16 – 30 सितम्बर 2025 | मूल्यः 5 रुपये | RNI No.WBHIN/2014/59321, ISSN No. 2456/3005 Kolkata | कुल पृष्ठ – 8

सुविचार

- महानता कभी ना गिरने में नहीं है, बल्कि हर बार गिरकर उठ जाने में है।
- सपने वही सच्चे होते हैं जो मेहनत के पसीने से सींचे जाते हैं।
- जो आपकी खामोशी को समझ ले, वही आपका सच्चा साथी है।
- जिस व्यक्ति के पास कल्पना नहीं है, उसके पास पंख नहीं हैं।
- जीवन की त्रासदी ये है कि आपके पास कोई लक्ष्य ही नहीं है।

शेरो-शायरी

उस की याद आई है सांसों ज़रा आहिस्ता चलो, धड़कनों से भी इबादत में खलल पड़ता है।

कदमों को बांध ना पाएगी, मुसीबत की ज़ंजीरें, रास्तों से ज़रा कह दो, अभी भटका नहीं हूँ मैं।

किसी पर इतना भरोसा नहीं करना चाहिए कि आपके भरोसे का कोई नाजायज फायदा उठा जाए।

शहर वालों की मोहब्बत का मैं कायल हूं मगर, मैंने जिस हाथ को चूमा वही खंजर निकला।

यूं तो बहुत से लोग मिलते हैं, मगर तुझ जैसा कोई नहीं

जीएसटी को लेकर फिर मिल सकती है खुशखबरी!

पीएम मोदी ने दिए राहत के संकेत

निज संवाददाता

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने संकेत दिया कि सरकार वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) ढांचे के तहत और कदम उठाने की तैयारी कर रही है। उन्होंने कहा-हम यहीं नहीं रुकेंगे। जिससे यह अटकलें तेज़ हो गई हैं कि उपभोक्ताओं और कारोबारियों को एक और राहत पैकेज जल्द मिल सकता है।मालूम हो कि सप्ताह की शुरुआत में ही ''नेक्स्ट-जेन जीएसटी'' व्यवस्था लागू हुई है। इसके तहत विभिन्न कर दरों को घटाकर अब दो प्रमुख श्रेणियों5 फीसद और 18 फीसदमें सीमित कर दिया गया है। साथ ही कई उपभोक्ता वस्तुओं, इलेक्ट्रॉनिक्स और घरेलू उत्पादों पर कर में कटौती की गई है। सुधारों का मक़सद अनुपालन

हम यहीं नहीं रुकेंगे, जीएसटी में बदलाव से गरीबों की बचत

को आसान बनाना, रिफंड की प्रक्रिया तेज़ करना और छोटे कारोबारियों व सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) को राहत देना है।त्योहारी सीज़न की बढ़ती मांग को देखते हुए उद्योग जगत का मानना है कि सरकार आगे दरों का और सरलीकरण, चुनिंदा क्षेत्रों को छूट तथा अनुपालन सहायता बढ़ा सकती है। भारतीय रिज़र्व बैंक ने हाल ही में कहा था कि इस तरह के कर सुधार खुदरा कीमतों में कमी लाकर खपत को बढ़ावा दे सकते हैं।हालांकि विशेषज्ञों का कहना है कि अधिक कर कटौती से केंद्र और राज्यों की आय पर असर पड़ सकता है। किसी भी नई राहत योजना के लिए जीएसटी परिषद की सहमति आवश्यक होगी, जिसने पिछले सप्ताह अपनी 56वीं बैठक में हालिया सुधारों को मंज़ूरी दी थी।फिलहाल प्रधानमंत्री के इस बयान ने बाज़ार और उपभोक्ताओं में उत्सुकता जगा दी है कि आने वाले दिनों में जीएसटी से जुड़ी और खुशखबरी मिल सकती है, जिससे त्योहारी सीज़न में उद्योग भावना और उपभोक्ता भरोसा दोनों को बल मिलेगा।

भाजपा तीन माह चलाएगी आत्मनिर्भर भारत और हर घर स्वदेशी अभियान

निज संवाददाता : भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) पंडित दीनदयाल उपाध्याय की जयंती (25 सितंबर) से पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की जयंती (25 दिसंबर) की जयंती तक आत्मनिर्भर भारत और हर घर स्वदेशी अभियान चलाएगी।भाजपा महासचिव अरूण सिंह ने गुरुवार को पार्टी मुख्यालय में संवाददाताओं को यह जानकारी दी। उन्होंने कहा-आज हम सबके प्रेरणास्रोत पंडित दीनदयाल उपाध्याय की जयंती है। आज से भाजपा आत्मनिर्भर भारत और हर घर स्वदेशी अभियान देशभर में व्यापक रूप से शुरू करने जा रही है। यह अभियान आगामी 25 दिसंबर पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की जयंती तक चलेगा। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 2047 तक विकसित भारत बनाने का संकल्प लिया है और इसका रास्ता आत्मनिर्भर भारत से होकर जाता है, जिसके मूल में स्वदेशी ही हैं।भाजपा महासचिव ने कहा-प्रधानमंत्री ने 140 करोड़ देशवासियों से आग्रह किया है कि आप जो भी खरीदें, वह भारत में बनी हो और जिसमें हमारे देशवासियों का पसीना शामिल हो। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री के आह्वान पर भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने पार्टी कार्यकर्ताओं से देशभर में व्यापक अभियान चलाने के निर्देश दिए हैं, ताकि जन-जन को स्वदेशी अभियान से जोड़कर इसे एक राष्ट्रव्यापी जनआंदोलन बनाया जा सके।सिंह ने कहा- मोदी के नेतृत्व में भारत का निर्यात और अर्थव्यवस्था का आकार बढ़ा है। उनके नेतृत्व में आधारभूत ढांचे में अभूतपूर्व विकास और बढ़ोतरी हुई है। इसका कारण हमारी सरल और पारदर्शी नीतियां है, जिससे देश में व्यापार और उद्योगों को बल मिला है। इस समय देश में 1.59 लाख स्टार्टअप काम कर रहे हैं।

रणनीतिक महाशक्ति क्लब में पहुंचा भारत

निज संवाददाता : भारत ने इतिहास रचते हुए परमाणु-सक्षम अग्नि-प्राइम बैलिस्टिक मिसाइल का सफल परीक्षण एक रेल-आधारित मोबाइल लांचर से किया। यह अपनी तरह की पहली उपलब्धि है, जिसने देश की परमाणु प्रतिरोधक क्षमता को और मजबूत बना दिया है।यह परीक्षण 24 सितंबर को रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) और स्ट्रैटेजिक फोर्सेज कमांड (एसएफसी) के सहयोग से किया गया। परीक्षण ने युद्धक्षेत्र जैसी परिस्थिति में मिसाइल की संचालन-क्षमता को सिद्ध किया। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने इसे ''भारत की रणनीतिक तैयारी में एक बड़ी छलांग'' बताते हुए

पहला रेल-आधारित प्रक्षेपण

सफलता की पुष्टि की।आधिकारिक बयान के अनुसार, मिसाइल को एक विशेष रूप से निर्मित ट्रेन से प्रक्षेपित किया गया और इसने सभी मिशन उद्देश्यों को पूरा किया। निगरानी केंद्रों ने इसे ''टेक्स्टबुक लॉन्च'' करार दिया, क्योंकि मिसाइल ने सटीक रूप से अपनी उड़ान पथ का पालन किया।अग्नि-प्राइम एक नई पीढ़ी की मध्यम दूरी की बैलिस्टिक मिसाइल है, जिसकी मारक क्षमता 2,000 किलोमीटर तक है। यह अपने पुराने संस्करणों की तुलना में हल्की, अधिक सटीक और तेजी से तैनात होने योग्य है। यही कारण है कि इसे सड़क और रेलदोनों माध्यमों से आसानी से लॉन्च किया जा सकता है।यह मिसाइल परमाणु-सक्षम है, जिससे भारत की विश्वसनीय प्रतिरोधक क्षमता और बढ़ गई है। पहले सड़क-आधारित परीक्षण सफल रहे थे और अब रेल-आधारित लॉन्च ने इसमें एक नया आयाम जोड़ दिया है।इस परीक्षण के साथ भारत उन चुनिंदा देशों की सूची में शामिल हो गया है जिनमें रूस, चीन और अमेरिका पहले से मौजूद हैं। रेल-आधारित क्षमता मिसाइलों को अधिक सुरक्षित और छुपाकर ले जाने योग्य बनाती है, क्योंकि इन्हें भारतीय रेल नेटवर्क के 70,000 किमी लंबे ट्रैक पर आसानी से मूव कराया जा सकता है।

पूजा की भीड़ को संभालने के लिए रेलवे ने उठाया कदम

-पंचमी से हावड़ा-सियालदह शाखा में रहेगी अतिरिक्त सुरक्षा

निज संवाददाता : पूर्व रेलवे ने दुर्गा पूजा की भीड़ को संभालने के लिए कमर कस ली है। गुरुवार को एक अधिसूचना जारी कर इसकी विस्तृत घोषणा की गई। 27 सितंबर यानी पंचमी से हावड़ा और सियालदह की विभिन्न शाखाओं में अतिरिक्त रेलवे पुलिस तैनात की जाएगी। यात्रियों की सुरक्षा और आपराधिक गतिविधियों को रोकने के लिए अतिरिक्त महिला आरपीएफओ तैनात की जाएंगी। इसके अलावा, पूजा करने वालों की भीड़ को संभालने के लिए सियालदह में अतिरिक्त टिकट काउंटर खोले जा रहे हैं। साथ ही क्यूआर कोड टिकटिंग प्रणाली भी होगी।मालूम हो कि दुर्गा पूजा के कुछ दिनों तक पूरी रात प्रतिमा के दर्शन के लिए कोलकाता में भीड़ लगना कोई नई बात नहीं है। इस भीड़ में ज्यादातर ट्रेन और मेट्रो यात्री होते हैं। उनकी यात्रा सुविधा को ध्यान में रखते हुए, मेट्रो अधिकारी हर साल चौबीसों घंटे सेवाएं प्रदान करते हैं। इस बार भी कोई अपवाद नहीं है। मेट्रो रेल ने पंचमी से दशमी तक का शेड्यूल पहले ही जारी कर दिया है। इस बार, पूर्व रेलवे ने पूजा के दौरान रेल यात्रियों के लिए अतिरिक्त सुरक्षा उपायों की घोषणा की है। 27 तारीख यानी पंचमी से, आरपीएफ हावड़ा और सियालदह शाखाओं के सबसे अधिक भीड़भाड़ वाले स्टेशनों पर गश्त बढ़ा देगी।यह सुरक्षा व्यवस्था सियालदह और हावड़ा स्टेशनों के पास कम से कम 200 प्रसिद्ध पूजा पंडालों के आसपास होगी। विशेष आरपीएफ तैनात की जाएगी। इनमें 500 महिला आरपीएफओ होंगी। नियंत्रण कक्ष खोले जा रहे हैं। भीड़ में चोरी और डकैती जैसी घटनाओं को रोकने के लिए, रेलवे पुलिस ड्रोन की मदद से निगरानी करेगी। इसके अलावा, 6,500 से अधिक सीसीटीवी कैमरों से 24 घंटे नियंत्रण कक्ष से निगरानी की जाएगी। इसके लिए, पूर्व रेलवे पूजा के दौरान अतिरिक्त कर्मचारियों को तैनात कर रहा है।इस बीच, रेलवे सूत्रों के अनुसार, यात्रियों की सुविधा के लिए पूजा के दौरान सियालदह और दमदम में अतिरिक्त टिकट काउंटर खोले जा रहे हैं। यात्रियों को क्यूआर कोड वाले टिकट मिलेंगे।

अत्याधुनिक रोबोटिक कार्डियक टेली-सर्जरी तकनीक का कमाल

दो हज़ार किलोमीटर दूर से हुआ सफल हार्ट ऑपरेशन

निज संवाददाता : भारत ने हार्ट सर्जरी के क्षेत्र में नया इतिहास रच दिया है। मरीज बेंगलुरु के एक निजी अस्पताल में भर्ती थे और चिकित्सक ने गुरुग्राम में बैठकर रोबोट की मदद से जटिल हार्ट ऑपरेशन पूरा कर दिया। दूरी लगभग दो हज़ार किलोमीटर थी। यह दुर्लभ सफलता संभव हुई अत्याधुनिक रोबोटिक कार्डियक टेली-सर्जरी तकनीक के माध्यम से।मालूम हो कि 35 वर्षीय मरीज के हृदय में छेद पाया गया था। हालत गंभीर होने के कारण उसे कहीं और ले जाना संभव नहीं था। इसलिए निर्णय लिया गया कि टेली-सर्जरी के ज़रिए ही ऑपरेशन किया जाएगा। एसएस इनोवेशन के चेयरमैन डॉ. सुधीर श्रीवास्तव ने बेंगलुरु के डॉक्टरों की मदद से रोबोट को दूर से नियंत्रित कर ढाई घंटे में यह ऑपरेशन सफलतापूर्वक पूरा किया।रोबोटिक सर्जरी पहले से ही यूरोलॉजी, कार्डियक, गैस्ट्रोएंटरोलॉजी, स्त्री रोग, किडनी, हेड-नेक और कैंसर ऑपरेशन में अहम भूमिका निभा रही है। कम समय में सटीक परिणाम के लिए अब डॉक्टर रोबोटिक तकनीक को चुन रहे हैं। लेकिन टेली-सर्जरी ने चिकित्सा विज्ञान की सीमाओं को और आगे बढ़ा दिया है।2019 में गुरुग्राम की कंपनी एसएस इनोवेशन ने देशी तकनीक से पहला परीक्षणात्मक रोबोट तैयार किया। उनका 'एसएसआई मंत्र' नामक रोबोट 2022 से इस्तेमाल हो रहा है। अब इसका तीसरा संस्करण भी आ चुका है, जो विदेशी दा विंची रोबोट की तुलना में कहीं अधिक किफायती है। डॉक्टरों के अनुसार, इस रोबोट की खासियत यह है कि आवश्यकता पड़ने पर इसकी पांच 'भुजाएँ' एक साथ काम कर सकती हैं, जिससे हृदय रोग जैसी जटिल सर्जरी भी आसानी से संभव हो जाती है।यह दुर्लभ उपलब्धि साबित करती है कि आधुनिक तकनीक की मदद से भारत की स्वास्थ्य व्यवस्था एक और बड़ी छलांग लगा चुकी है।

एच-वन-बी वीज़ा विवाद और आत्मनिर्भर भारत का अवसर

अजय कुमार मोहता

अमेरिका ने हाल ही में अपनी बहुप्रतीक्षित एच-वन-बी वीज़ा नीति में बड़ा बदलाव किया है। इसके तहत नए आवेदनों पर एक लाख अमेरिकी डॉलर की भारी फीस लगाने का प्रस्ताव रखा है। बड़ी बात यह कि यह निर्णय केवल आप्रवासन नीति का मामला नहीं है बल्कि बदलते वैश्विक आर्थिक समीकरणों और श्रम बाज़ार की गहरी हलचलों का प्रतीक है। भारतीय पेशेवर, जो अब तक एच-वन-बी वीज़ा धारकों का लगभग सत्तर प्रतिशत हिस्सा बनाते थे, इस कदम से सीधे प्रभावित हो रहे हैं। लेकिन यही संकट भारत के लिए अवसर भी ला सकता है। यदि लौटती हुई प्रतिभाओं यानी रिवर्स ब्रेन ड्रेन का सही इस्तेमाल हो तो यह आत्मनिर्भर भारत की दिशा में ऐतिहासिक मील का पत्थर साबित हो सकता है।एच-वन-बी वीज़ा लंबे समय से अमेरिकी तकनीकी कंपनियों की रीढ़ रहा है। गूगल, माइक्रोसॉफ्ट और अमेज़न जैसी दिग्गज कंपनियों में बड़ी संख्या में भारतीय आईटी पेशेवर कार्यरत हैं। किंतु अब अमेरिका में संरक्षणवादी रुझान और आर्थिक राष्ट्रवाद खुलकर सामने आ रहा है। विकसित देश अपने घरेलू श्रमिक वर्ग को संतुष्ट करने के दबाव में बाहरी प्रतिभाओं पर निर्भरता घटाने लगे हैं। यह एक विरोधाभासी स्थिति है क्योंकि अमेरिकी श्रम बाज़ार में उच्च तकनीकी क्षेत्रों में पर्याप्त घरेलू संसाधन नहीं हैं, लेकिन राजनीतिक दबाव इसे बाहर से आने वाले लोगों पर रोक लगाने के लिए मजबूर कर रहा है। अमेरिका आव्रजन को केवल श्रम गतिशीलता का विषय नहीं मानता बल्कि इसे व्यापारिक हथियार के रूप में भी प्रयोग कर रहा है। वीज़ा शुल्क में इस प्रकार की बढ़ोतरी से न केवल राजस्व अर्जित होगा बल्कि अन्य देशों पर राजनीतिक दबाव भी डाला जाएगा। ₹

इसी दौरान कनाडा, ब्रिटेन और ऑस्ट्रेलिया जैसे देश अपनी आप्रवासन नीतियों को उदार बना रहे हैं। इसका सीधा अर्थ है कि वैश्विक प्रतिभा प्रतिस्पर्धा का भूगोल बदल रहा है और अमेरिका का आकर्षण धीरे-धीरे कम हो सकता है।इस नीति परिवर्तन का असर भारतीय प्रवासी समुदाय पर बहुआयामी है। एक ओर लाखों परिवारों में नौकरी की असुरक्षा और भविष्य की अनिश्चितता का माहौल बन गया है। बच्चों की पढ़ाई, सामाजिक जीवन और पारिवारिक स्थिरता पर इसका असर पड़ रहा है। वहीं दूसरी ओर भारत में इसका सकारात्मक पक्ष भी उभर रहा है। बड़ी संख्या में पेशेवर भारत लौटने के लिए प्रेरित होंगे। वे केवल पूंजी ही नहीं बल्कि वैश्विक अनुभव, नेटवर्क और तकनीकी दक्षता भी लेकर आएंगे। इस प्रकार भारत के स्टार्ट-अप और यूनिकॉर्न इकोसिस्टम को नई ऊर्जा मिल सकती है। विदेशों से लौटे पेशेवरों के पास निवेशकों का दृष्टिकोण और अंतरराष्ट्रीय बाज़ार का अनुभव होगा, जिससे भारत का उद्यमिता वातावरण और मजबूत हो सकता है।एक और बड़ा अवसर यह है कि लौटे हुए विशेषज्ञ भारत के अनुसंधान और विकास क्षेत्र में अहम योगदान देंगे। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, जैव प्रौद्योगिकी, क्वांटम कंप्यूटिंग और सेमीकंडक्टर जैसे क्षेत्रों में वैश्विक प्रतिस्पर्धा बढ़ रही है। यदि लौटे हुए वैज्ञानिक और इंजीनियर भारतीय संस्थानों से जुड़ें तो देश में नवाचार की गति तेज़ हो सकती है। इससे आत्मनिर्भर भारत अभियान को वास्तविक बल मिलेगा। इसके अलावा डिजिटल इंडिया और मेक इन इंडिया जैसी पहलें उन प्रतिभाशाली पेशेवरों की मदद से मज़बूत होंगी जो विदेशों में आधुनिक तकनीकी अनुभव लेकर आएंगे।भारत के लिए यह समय केवल इंतजार करने का नहीं है, बल्कि ठोस नीतिगत कदम उठाने का है।

सरकार को लौटती प्रतिभाओं का स्वागत करने के लिए विशेष योजनाएं बनानी होंगी। उदाहरण के लिए रिटर्निंग टैलेंट स्कीम के तहत विदेशों से लौटने वाले पेशेवरों को कर में छूट, निवेश प्रोत्साहन और विशेष स्टार्ट-अप पैकेज दिए जा सकते हैं। विश्वविद्यालयों और उद्योगों के बीच सहयोग के लिए उच्चस्तरीय शोध प्रयोगशालाएं और नवाचार केंद्र विकसित किए जा सकते हैं। निजी क्षेत्र को अनुसंधान और विकास में निवेश बढ़ाने के लिए कर रियायत और प्रोत्साहन दिया जा सकता है। इसके साथ ही वेंचर कैपिटल और प्राइवेट इक्विटी फंड्स को प्रवासी पेशेवरों के अनुभव से जोड़कर वित्तीय इकोसिस्टम को मज़बूत करना आवश्यक होगा।लौटे हुए प्रवासियों और उनके परिवारों के लिए सामाजिक पुनर्वास योजनाएं भी उतनी ही महत्वपूर्ण हैं। यदि उन्हें भारत में बसने के दौरान कठिनाइयां झेलनी पड़ेंगी तो उनकी प्रतिभा का पूरा लाभ नहीं उठाया जा सकेगा। सरकार को शिक्षा, स्वास्थ्य और आवास जैसी बुनियादी सुविधाओं में उन्हें आसानी उपलब्ध करानी होगी ताकि वे बिना किसी झंझट के समाज और अर्थव्यवस्था का हिस्सा बन सकें।इस प्रकार एच-वन-बी वीज़ा विवाद भारत के सामने दोहरी चुनौती पेश करता है। एक ओर लाखों प्रवासी भारतीयों की आजीविका और भविष्य की चिंता है, तो दूसरी ओर यही संकट भारत के लिए सुनहरा अवसर भी है। यदि भारत इस अवसर का लाभ उठाकर रिवर्स ब्रेन ड्रेन को अपनी ताकत बना लेता है तो आत्मनिर्भर भारत की परिकल्पना को नई दिशा और ऊर्जा मिलेगी। संकट हमें यह याद दिलाता है कि आत्मनिर्भरता केवल नारे से नहीं बल्कि दूरदर्शी नीतियों और वैश्विक अवसरों को साधने की क्षमता से संभव है।

Page-2_ARO KHABAE PAGE-1.qxd 9/25/2025 6:22 PM Page 1

नवरात्र : शक्ति की आराधना का महापर्व

हर्षवर्धन पान्डे

नवरात्र भारतीय संस्कृति में एक पवित्र पर्व है जो दैवीय शक्ति की विजय का प्रतीक माना जाता है। यह नौ रातों और दस दिनों का उत्सव मां दुर्गा की पूजा और उनके नौ रूपों के सम्मान में मनाया जाता है। नवरात्र का अर्थ है नौ रातें और यह पर्व वर्ष में दो बार चैत्र मार्च-अप्रैल और शारदीय सितंबर-अक्टूबर में उत्साह के साथ मनाया जाता है। यह उत्सव न केवल धार्मिक बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है जो बुराई पर अच्छाई की विजय का संदेश देता है। एक ही परम तत्व परमपुरुष पराशक्ति के रूप में सर्वत्र व्यापक है। शास्त्रकारों ने एक ही शक्ति को कभी पुरुष के रूप में तो कभी देवी के रूप में स्वीकारा है। सब के घट में एक समान विराजमान वह दिव्य शक्ति प्रकाश के रूप में हमेशा मौजूद रहती है जिसे जीवन शक्ति कहा जाता है और उसका दर्शन होना ही शक्ति की आराधना है। दुष्टों का संहार करके भक्तों की रक्षा करने हेतु कभी काली तो कभी दुर्गा के रूप में उस शक्ति का अवतरण इस धरा पर हुआ है। दुर्गा जी की पूजा अर्चना का विधान वेद, पुराण, उपनिषदों हिन्दुओं के अन्य धर्मशास्त्रों में भी मिलता है। वेद में एकोएहं बहुस्याम और अजाय मानों बहुधा ब्यजायत के रूप में और देवी पुराण में सा वाणी साच सावित्री विप्राधिष्ठात वहां सर्व दुर्गा के रूप में संस्थापित है। मार्कण्डेय पुराण में स्वयं मान जएकैवाहं जगत्यत्र द्वितीया का ममापरा। पश्यैता दुष्ट मय्येव विशन्त्यो मद्विभूतयः अर्थात मैं ही दुर्गा हूं , सर्वशक्ति स्वरूपा हूं और मुझमें ही पूरी सृष्टि विलीन है। आशय यह है कि यह विशाल सृष्टि उत्पन्न होती है, बढ़ती है और विभिन्न रूपों में परिवर्तित होकर अंत में विनिष्ट हो जाती है। देवी पुराण में एक बड़े रोचक कथा प्रसंग की चर्चा की गयी है। अक्सर भ्रम में पड़ जाने वाले देवर्षि नारद को एक बार भ्रम हो गया। ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीनों सर्वश्रेष्ठ हैं तो भला ये तीनों किस महाशक्ति का स्मरण करते हैं? नारद जी अपने सन्देश निवारण हेतु शिव के पास गए और बोले मुझे ब्रह्मा, विष्णु और महेश से बढ़कर कोई अन्य देवता नहीं दिखाई देता है फिर आप तीनों से ऊंचा कौन है जिसकी उपासना और स्मरण आप करते हैं? शिव मुस्कुराये और बोले- हे ऋषिवर सूक्ष्म और शूल शरीर से परे जो महाप्राण आदिशक्ति जगदम्बा है वही तो परब्रह्म स्वरुप है। वह केवल अपनी इच्छा मात्र से ही सृष्टि की रचना, पालन और संहार करने में समर्थ है। वस्तुतः वह आदिशक्ति दुर्गा निर्गुण स्वरूप है परन्तु उसे किसी भी रूप मे मन समय-समय पर धर्म की रक्षा और दुष्टों के विनाश के लिए साकार होना पड़ता है। इसी समय-समय पर पार्वती, दुर्गा,काली, चंडी, सरस्वती आदि अवतार धारण किये हैं। इसी जगत जननी का सभी देव भी स्मरण करते हैं। वैसे भी आदिशक्ति स्वरुप दुर्गा में सभी देवताओं का कुछ न कुछ अंश शामिल है।दुर्गाशप्तशती के दूसरे अध्याय में देवी स्वरुप का वर्णन करते हुए बतलाया गया है भगवान शंकर के तेज से उस देवी का मुख प्रकट हुआ। यमराज के तेज से मस्तक के केश, विष्णु के तेज से भुजाएं, चन्द्रमा के तेज से स्तन, इंद्रा के तेज से कमर, वरुण के तेज से जंघा, पृथ्वी के तेज से नितम्ब, ब्रह्म के तेज से चरण, सूर्य के तेज से दोनों पैरों की अंगुलियां, वसुओं के तेज से दोनों हाथों की अंगुलियां, प्रजापति के तेज से सम्पूर्ण दांत, अग्नि के तेज से दोनों नेत्र, संध्या के तेज से भौहें, वायु के तेज से कान, अन्य देवताओं के तेज से देवी के भीं- भीं अंग बने। इसी प्रकार सभी अमोघ शक्तियों से दुर्गा के रूप में एक आदिशक्ति का सृजन किया गया इसलिए यह स्वरुप सभी देवताओं के लिए स्मरणीय हो गया। आज दो नवरात्रि के रूप में मां जगदम्बा की पूजा शारदीय और वासंतीक दोनों नवरात्र दोनों में जारी है। शारदीय नवरात्र आश्विन मास में और वासंतिक नवरात्र अभी चैत्र माह में होते हैं। चैत्र वर्ष प्रतिपदा से हिन्दुओं का नया संवत्सर शुरू होता है। दोनों नवरात्र का समान महत्व है। नौ दिन और नौ रातों तक

मां दुर्गा के नौ अलग -अलग रूपों की पूजा की जाती है। यह आज तक रहस्य बना हुआ है। दुर्गा की पूजा सबसे पहले राम ने की या किसी अन्य ने लेकिन इतना तय है लंका पर चढ़ाई और रावण वध से पहले राम ने आदिशक्ति स्वरूप मानकर दुर्गा जी की पूजा की। यह स्थान भी रामेश्वरम के नाम से जाना जाता है। नवरात्र महोत्सव आसुरी शक्ति पर दैवीय शक्ति की विजय का प्रतीक है। नवरात्र में प्रथमा से लेकर नवमी तक शक्ति के 9 स्वरूपों की पूजा -अर्चना होती है। ये नौ शक्तियां बहनों का स्वरुप हैं और इन नौ शक्तियों के विभिन्न नाम रूप के कारण शारदीय नवरात्र उत्सव का उल्लास देखते ही बनता है। 9 दिनों में लोगों की भक्ति भावना, आस्था और शक्ति देखते ही बनती है। माता की नौ शक्तियों के नाम हैं शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघटा, कुष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायिनी, कालरात्रि, महागौरी और सिद्धदात्री। प्रत्येक दिन मां दुर्गा के एक अलग रूप की पूजा की जाती है। जैसे प्रथम दिन शैलपुत्री, दूसरे दिन ब्रह्मचारिणी, तीसरे दिन चंद्रघंटा, चौथे दिन कुष्मांडा, पांचवे दिन स्कंदमाता, छठे दिन कात्यायनी, सातवें दिन कालरात्रि, आठवें दिन महागौरी और नवें दिन सिद्धिदात्री। ये नौ रूप नारी शक्ति के विभिन्न पहलुओं को भी दर्शाते हैं। नवरात्र में अंतिम दिन पर कन्या पूजा का विशेष महत्व होता है। इस दिन नौ कुमारी कन्याओं को देवी स्वरुप मानकर लोग उनका विशेष पूजन भोजन, उपहार देकर करते हैं। कन्या पूजन में दो वर्ष से लेकर 10 वर्ष तक की कन्याओं को पूजा जाता है। दस वर्ष से अधिक वर्ष की कन्याओं का पूजन वर्जित है। दो वर्ष की कन्या कन्याकुमारी, तीन वर्ष की त्रिमूर्तिनी, चार वर्ष की कल्याणी, पांच वर्ष की रोहिणी, छह वर्ष की काली, सात वर्ष की चंडिका, आठ वर्ष की शम्भवी, नौ वर्ष की दुर्गा और दस वर्ष की सुभद्रा स्वरूपा मानी गयी है। पौराणिक कथाओं के अनुसार मां दुर्गा ने नौ दिनों तक राक्षस महिषासुर से युद्ध किया और दसवें दिन उसका वध कर बुराई पर विजय प्राप्त की। यह विजय पर्व दशहरा के रूप में मनाया जाता है। नवरात्र का उत्सव भारत के विभिन्न हिस्सों में अलग-अलग तरीकों से मनाया जाता है। गुजरात में गरबा और डांडिया नृत्य इस पर्व का मुख्य आकर्षण हैं जो सामूहिक उत्सव और एकता का प्रतीक हैं। पश्चिम बंगाल में दुर्गा पूजा के रूप में यह पर्व भव्य पंडालों और मूर्ति पूजा के साथ मनाया जाता है। उत्तर भारत में रामलीला और दशहरा इस उत्सव का हिस्सा है जो भगवान राम की रावण पर विजय को दर्शाते हैं। नवरात्र की पूरे देश में विशेष धूम रहती है। नवरात्र केवल धार्मिक अनुष्ठानों तक सीमित नहीं है। यह सामाजिक एकता को भी बढ़ावा देता है। लोग एक साथ इकट्ठा होकर नृत्य, गीत और भक्ति में लीन हो जाते हैं। यह पर्व नारी शक्ति के सम्मान का भी प्रतीक है जो समाज में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करता है। नवरात्र का पर्व हमें आंतरिक शुद्धता और आत्म-नियंत्रण का महत्व भी सिखाता है। यह समय आत्म-चिंतन, उपवास और भक्ति के लिए उपयुक्त माना जाता है। उपवास के माध्यम से लोग अपने शरीर और मन को शुद्ध करते हैं जबकि माँ दुर्गा की पूजा से वे दैवी शक्ति और सकारात्मकता की प्राप्ति के लिए प्रार्थना करते हैं। यह पर्व हमें यह भी सिखाता है कि जीवन में कितनी भी कठिनाइयाँ क्यों न आएं, सत्य और धर्म की शक्ति से हर बुराई पर विजय प्राप्त की जा सकती है। नवरात्र में की गई पूजा मानव मन की मलिनता को दूर करके भगवती दुर्गा के चरणों में लीन होकर जीवन में सुख, शांति और ऐश्वर्य की समृद्धि लाती है। कन्या पूजन से अनेक व्याधियों से मुक्ति होने की वैज्ञानिक पुष्टि भी होती है। उस शक्ति स्वरूपा का दर्शन नवरात्र में करना हर किसी के जीवन का लक्ष्य होना चाहिए। नवरात्र अर्थात शक्ति की आराधना का महापर्व है जिससे धर्म, अर्थ , काम, मोक्ष का पुरुषार्थ भी सफल होता है। नवरात्र न केवल एक धार्मिक उत्सव है बल्कि यह एक ऐसा अवसर है जो हमें शक्ति, साहस और भक्ति की प्रेरणा देता है। यह पर्व हमें यह विश्वास दिलाता है कि दैवीय शक्ति हमेशा हमारे साथ है जो हमें जीवन की हर चुनौती का सामना करने की ताकत देती है।

20 फीट ऊंचे पक्षी की प्रतिमा बनी आकर्षण का केंद्र गुप्तिपाड़ा : बंगाल की पहली बारोवारी दुर्गा पूजा

बागुईआटी रेल पोखर यूनाइटेड क्लब ने 'शब्द' को बनाया पूजा थीम सीएम ममता ने वर्चुअली किया पंडाल का उद्घाटन

निज संवाददाता : बागुईआटी रेल पोखर यूनाइटेड क्लब ने अपनी 72वीं दुर्गा पूजा की थीम इस बार ''शब्द'' को बनाया है। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने इस पंडाल का वर्चुअल उद्घाटन किया।इस वर्ष का थीम ''शब्द'' आगंतुकों को एक भावनात्मक यात्रा पर ले जाता है, जहां प्रकृति की लुप्त होती आवाज़ेंपक्षियों का कलरव, पत्तों की सरसराहट और जीवन की तालजो कभी हमारे परिवेश की पहचान थीं, अब निरंतर शहरीकरण के शोर में दबती जा रही हैं। इस पंडाल का मुख्य आकर्षण है 20 फीट ऊंचा कलात्मक पक्षी का इंस्टॉलेशन, जो

प्रकृति की भव्यता और पक्षियों के विलुप्त होने से पैदा हुई खामोशी का प्रतीक है। इस अनुभव को और प्रभावी बनाया गया है सजीव ध्वनियों और प्रसिद्ध कलाकार शुभेंदु मुखोपाध्याय और कौशिक विश्वास के माइम प्रदर्शन से, जो पक्षियों की मौन पुकार को स्वर देते हैं और आगंतुकों को अपनी पारिस्थितिक जिम्मेदारी पर विचार करने के लिए प्रेरित करते हैं।इस अवसर पर क्लब समिति के सदस्य गौरव विश्वास ने कहा ''हमारा थीम 'शब्द' केवल एक कलात्मक रचना नहीं, बल्कि एक चेतावनी है। पक्षियों और प्रकृति की आवाज़ें, जो कभी हमारे जीवन का हिस्सा थीं, तेजी से मिट रही हैं। इस सृजन के माध्यम से हम उम्मीद करते हैं कि लोग जागरूक होंगे, इससे पहले कि भविष्य की पीढ़ियां केवल खामोशी ही सुनें।''''शब्द'' की सृजनात्मकता के पीछे एक समर्पित कलाकारों और डिज़ाइनरों की टीम है। थीम की परिकल्पना और डिज़ाइन सोमनाथ तामली ने किया है। दुर्गा प्रतिमा का निर्माण देबप्रसाद हाजरा ने किया है। जबकि रोशनी और छाया की कलात्मकता को निर्देशित किया है दिपंकर डे ने और भव्य पंडाल का निर्माण नेतृत्व किया है बापी दास ने। इनके दृष्टिकोण को पूरा करने में उनका साथ जिन लोगों ने दिया है उनमेंसमीरन जाना (सिनेमैटोग्राफी और एडिटिंग), पौलामी बोस (शोध), फारुख शेख (चित्रकारी और डिज़ाइन) और देबायन बनर्जी (ध्वनि और संगीत) प्रमुख हैं।मुख्यमंत्री के वर्चुअल उद्घाटन के साथ ही, बागुईआटी रेल पोखर यूनाइटेड क्लब का ''शब्द'' न सिर्फ़ एक पर्व का उत्सव है, बल्कि यह जीवन की प्राकृतिक ध्वनियों को संरक्षित करने की एक सशक्त याद दिलाता है। इससे पहले कि वे हमेशा के लिए खो जाएं।

निज संवाददाता : बंगाल की दुर्गा पूजा आज विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त उत्सव है। यूनेस्को की सांस्कृतिक धरोहर की सूची में इस पूजा का नाम शामिल हो चुका है, लेकिन इसकी जड़ें तलाशने जाएं तो पहुंचना होगा हुगली के गुप्तिपाड़ा में। इतिहास गवाही देता है, इसी गांव में जन्मी थी बंगाल की पहली बारोवारी दुर्गा पूजा।अठारहवीं शताब्दी के अंतिम दौर में, ज़मींदारों के घरों की भव्य दुर्गा पूजा आम लोगों की पहुंच से बाहर थी।

तभी गुप्तिपाड़ा के बारह युवकों ने मिलकर पहल की, ताकि गांव के प्रत्येक व्यक्ति समान रूप से इस आनंद उत्सव में भाग ले सकें। 'बारो-यारी' शब्द से ही निकला बारोवारी पूजाजहां व्यक्तिगत नहीं, बल्कि समाज सामूहिक रूप से पूजा का आयोजन करता है।गुप्तिपाड़ा की इस पहल में

केवल धार्मिक अनुष्ठान ही नहीं था, बल्कि इसके भीतर था सामाजिक समानता का बीज। सबने मिलकर चंदा जुटाया, प्रतिमा गढ़ी, आयोजन किया। एक तरह से यह एक नए लोकतांत्रिक दृष्टांत की शुरुआत थी। ज़मींदारों के ठाट-बाट से हटकर यहां लोगों ने अपनी पूजा, अपना आनंद पाया।आज कोलकाता सहित पूरे बंगाल में जो सार्वजनीन दुर्गोत्सव की धारा बह रही हैउसकी जड़ें गुप्तिपाड़ा की इसी पहली बारोवारी पूजा से जुड़ी हैं। थीम-पंडाल, आलोक-सज्जा, कला-प्रदर्शनसबका आधार है वही पहली सामूहिक कोशिश।गुप्तिपाड़ा के लोग आज भी गर्व के साथ याद करते हैं अपने पूर्वजों की इस पहल को। दुर्गोत्सव अब केवल देवी की आराधना नहीं, बल्कि एक सामाजिक उत्सव, मिलन-मेला और सृजनशीलता का मंच है। इसकी शुरुआत हुई थी हुगली के उस छोटे से गांव से।गुप्तिपाड़ा की पहली बारोवारी दुर्गा पूजा केवल बंगाल की पूजा-इतिहास ही नहीं, बल्कि यह सामाजिक एकता, समानता और सहभागिता का शाश्वत प्रतीक है।

काफी शानदार है बागबाज़ार सर्वजनिन दुर्गोत्सव और प्रदर्शनी का इतिहास

निज संवाददाता : बागबाज़ार सर्वजनिन दुर्गोत्सव और प्रदर्शनी का इतिहास लगभग एक शताब्दी से भी अधिक समय से बंगाली संस्कृति और उसकी प्रगति के साथ अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है। इस लंबे और समृद्ध कालखंड में इसने इतिहास के कई उतार-चढ़ाव और संकटों को देखा है। इस गौरवशाली इतिहास को हम दो हिस्सों में बांट सकते हैंपहला काल 1919 से 1930 तक और दूसरा काल 1930 के बाद।1919 में पहली बार बागबाज़ार के लोगों ने सरकार हाउस, 55 बागबाज़ार स्ट्रीट (नेबुबागान लेन और बागबाज़ार स्ट्रीट के मोड़ पर) में इस दुर्गोत्सव का आयोजन किया। इसका नाम रखा गया था ''नेबुबागान बारोयारी दुर्गापूजा''। यहां लगातार तीन वर्षों तक पूजा होती रही। 1924 में यह आयोजन बागबाज़ार स्ट्रीट और पशुपति बोस लेन के चौराहे पर हुआ। अगले वर्ष यह कांटापुकुर में आयोजित हुआ और 1927 में बागबाज़ार काली मंदिर प्रांगण में।1926 में प्रसिद्ध समाजसेवी नागेंद्रनाथ घोषाल के प्रयास से कई विद्वान और प्रतिष्ठित लोग इसमें जुड़े और पूजा एक संगठित रूप ले पाई। संगठन का नाम भी उन्होंने ही दिया। 1929 में पूजा के अवसर पर पहली बार एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।1930 में कोलकाता कॉरपोरेशन के एल्डरमैन दुर्गाचरण बंद्योपाध्याय संगठन के अध्यक्ष चुने गए। उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन और स्वदेशी विचारधारा से प्रेरित होकर प्रदर्शनी को बड़े स्तर पर आयोजित

किया और संगठन का नाम बदलकर रखा''बागबाज़ार सर्वजनिन दुर्गोत्सव और प्रदर्शनी''। प्रदर्शनी के लिए उन्होंने जिस जगह का चयन किया, वह आज का ''दुर्गा नगर'' है। उस समय इसे ''मेटल यार्ड'' कहा जाता था और यह कोलकाता कॉरपोरेशन के सड़क मरम्मत विभाग का गोदाम हुआ करता था। दुर्गाचरण बंद्योपाध्याय ने तत्कालीन मेयर नेताजी सुभाषचंद्र बोस से अनुमति मांगी। नेताजी ने अनुमति दी, कॉरपोरेशन और संगठन के संयुक्त प्रदर्शनी की पहल की और साथ ही 500 रुपये का दान भी दिया।1930 से ही यहां उद्घाटन और समापन समारोह दुर्गोत्सव का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया। उद्घाटन आश्विन मास की शुक्ल पक्ष की पंचमी को और समापन लक्ष्मी पूजन के दिन होता है। संतोष कुमार बसु, नेताजी सुभाषचंद्र बोस, आचार्य प्रफुल्लचंद्र राय, सर हरिशंकर पाल जैसे अनेक गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति ने इस आयोजन को विशेष ऊंचाई दी।1938-39 में नेताजी सुभाषचंद्र बोस स्वयं अध्यक्ष बने और सक्रिय रूप से जुड़े। पूजा के अलावा दो और विशेष आयोजन इस उत्सव की पहचान बनेमहाअष्टमी की सुबह वीराष्टमी उत्सव और विजयादशमी की सुबह सिंदूर खेला। क्रांतिकारी पुलिन दास, जो अनुशीलन समिति के प्रमुख सदस्य थे, शारीरिक रूप से असमर्थ होने तक नियमित रूप से वीराष्टमी उत्सव में उपस्थित रहते थे।स्वदेशी आंदोलन से जुड़ने के बाद इस उत्सव का महत्व और बढ़ा। कोलकाता ही नहीं, बल्कि दूर-दराज़ से लोग यहां आने लगे और यह उत्सव सचमुच जनता का पर्व बन गया।90 के दशक के अंत में संगठन ने ''मेटल यार्ड'' को स्थायी पार्क में बदलने के लिए सरकार से पहल की। कई प्रतिष्ठित लोगों के सहयोग से नये शताब्दी की शुरुआत में यह सपना साकार हुआ। वर्तमान में समिति इस पार्क के रखरखाव की स्वतंत्र जिम्मेदारी लेने के लिए सरकार से बातचीत कर रही है। उम्मीद है कि जल्द ही यह जिम्मेदारी संगठन को मिल जाएगी और यह गौरवशाली परंपरा आगे भी लंबे समय तक बनी रहेगी।

ऑपरेशन सिंदूर थीम पर दुर्गापूजा मंडप का निर्माण कर यंग बॉयज क्लब ने देश के वीर सैनिकों को किया नमन

निज संवाददाता : अपनी भव्य कलात्मकता और सामाज को जागरूक करनेवाली थीम के लिए प्रसिद्ध मध्य कोलकाता के बहुचर्चित दुर्गापूजा कमेटियों में एक ''यंग बॉयज क्लब'' दुर्गा पूजा कमेटी इस वर्ष ''ऑपरेशन सिंदूर'' थीम के जरिए भारत के सशस्त्र बलों को भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित कर अपनी स्थापना के 56वें वर्ष का जश्न मना रही है। तारा चंद दत्ता स्ट्रीट और सेंट्रल एवेन्यू को रवींद्र सरणी से जोड़ने वाले एक ऐतिहासिक स्थल पर बने भव्य थीम पर यह जीवंत पूजा मंडप, हज़ारों लोगों को इसकी भव्यता को देखने के लिए अपनी ओर आकर्षित कर रहा है। कलाकार देवशंकर महेश द्वारा डिज़ाइन किए गए इस मनमोहक पंडाल में कई आकर्षक कलाकृतियां हैं, जो थीम को जीवंत बनाती हैं। इस मंडप में दर्शकों को भारतीय सेना के टैंकों और मिसाइलों की जीवंत प्रतिकृतियां देखने को मिलेंगी। इस थीम का मुख्य आकर्षण भारतीय सेना का सिर गौरव से ऊंचा करनेवाली देश की वो दो वीर बेटियां, महिला अधिकारी कर्नल सोफिया कुरैशी और विंग कमांडर व्योमिका सिंह का सम्मान हैं। उनकी प्रतिकृतियां सेना में महिलाओं की शक्ति और नेतृत्व के सशक्त प्रतीक के रूप में खड़ी हैं।यंग बॉयज क्लब के मुख्य आयोजक राकेश सिंह ने कहा-दुर्गा पूजा हमारे लिए एक उत्सव से कहीं बढ़कर है।

यह एक भावना है, जो लोगों को एक साथ बांधती है। हर साल हम एक ऐसी थीम प्रस्तुत करने का प्रयास करते हैं, जो न केवल आगंतुकों को आकर्षित करे, बल्कि अपने मंडप के जरिए एक गहरा संदेश भी दे। इस वर्ष की थीम, ऑपरेशन सिंदूर, हमारे देश के उन वीर सैनिकों को हमारी ओर से सम्मान से दी गई श्रद्धांजलि है, जो साहस और समर्पण के साथ हमारे देश की रक्षा करते हैं। इस वर्ष पूजा के माध्यम से हम उनकी वीरता का जश्न मना रहे हैं और सभी आगंतुकों के मन में गर्व और देशभक्ति की भावना जगाना चाहते हैं।इस अवसर पर यंग बॉयज़ क्लब के युवा अध्यक्ष विक्रांत सिंह ने कहा-ऑपरेशन सिंदूर के माध्यम से हम अपने उन सैनिकों के साहस और बलिदान को सलाम करना चाहते हैं, जो अटूट समर्पण के साथ हमारे देश की रक्षा करते हैं। इस वर्ष का विषय केवल सजावट नहीं है। यह मातृभूमि के प्रति समर्पण और हमारे सशस्त्र बलों के वीर पुरुषों और महिलाओं के प्रति सम्मान है। हमें आशा है कि इस श्रद्धांजलि को देखकर प्रत्येक आगंतुकों को गर्व और कृतज्ञता की गहरी अनुभूति होगी।यंग बॉयज़ क्लब के सह-आयोजक विनोद सिंह ने कहा- हर साल हमारा लक्ष्य एक ऐसी दुर्गा पूजा का आयोजन करना है, जो न केवल भव्यता के माध्यम से, बल्कि सार्थक कहानियों के माध्यम से भी एक अमिट छाप छोड़े।

page-3_ARO KHABAE PAGE-1.qxd 9/25/2025 6:24 PM Page 1

एसएसकेएम में खुला किफायती अस्पताल

131 बिस्तरों वाले नए परिसर में मिलेंगी कम खर्च में सेवाएं

निज संवाददाता : महानगर के एसएसकेएम (पीजी) अस्पताल में एक नया व किफायती अस्पताल खोला गया है। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने हाल ही में 131 बिस्तरों वाले इस सशुल्क उपचार केंद्र का उद्घाटन किया। बड़ी बात यह कि इस केंद्र में निजी अस्पतालों की तुलना में काफ़ी कम खर्च में बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराई जाएंगी और यह सभी मरीज़ों के लिए खुला रहेगा।अनन्या नाम का यह नया अस्पताल, जिसे वुडबर्न 2 भी कहा जाता है, एक 10 मंज़िला इमारत है जिसमें सिंगल केबिन, सिंगल सुइट, एक उच्च निर्भरता इकाई (एचडीयू) और एक गहन चिकित्सा इकाई (आईटीयू) है। विज़िटमुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने कहा-वुडबर्न की यह नई इमारत निजी अस्पतालों के लिए कड़ी प्रतिस्पर्धा पेश करेगी। उन्होंने बताया कि प्रत्येक श्रेणी के लिए मूल रूप से प्रस्तावित शुल्क में ₹2,000 की कमी की गई है। उन्होंने कहा-

इससे शुरुआत करें। हम छह महीने बाद शुल्कों की समीक्षा करेंगे।यह सुविधा कुछ ही दिनों में कुछ सिंगल केबिनों में मरीजों को भर्ती करना शुरू कर देगी और जल्द ही ओपीडी सेवाएं भी शुरू कर देगी। खास बात यह है कि इसमें कोई गेटकीपिंग प्रतिबंध नहीं होंगे-वर्तमान में अन्य अस्पतालों में इलाज करा रहे मरीज भी नई सुविधा में प्रवेश ले सकते हैं।यह पहल बंगाल की एक गंभीर ज़रूरत को पूरा करती है, जहां 2021-22 में प्रति व्यक्ति जेब से स्वास्थ्य सेवा पर होने वाला खर्च ₹4,010 है- जो केरल (₹7,889) के बाद भारत में दूसरा सबसे ज़्यादा है। स्वास्थ्य अधिकारी सरकारी स्वास्थ्य सेवा तक सीमित पहुंच को इन बढ़ते खर्चों में एक महत्वपूर्ण कारक मानते हैं। हालांकि, जन स्वास्थ्य विशेषज्ञ इस सुविधा के संभावित प्रभाव को लेकर सतर्क हैं। एक विशेषज्ञ ने नाम न छापने की शर्त पर बताया-अगर इस सशुल्क सुविधा को सफल बनाना है, तो सिस्टम को बेहतर ढंग से प्रबंधित करना होगा। ज़्यादा जवाबदेही होनी चाहिए और लोगों को इलाज की सुविधा मिलनी चाहिए। ये चिंताएं इस बात पर ज़ोर देती हैं कि स्वास्थ्य सेवा वितरण प्रणालियों में सुधार के बिना सिर्फ़ बुनियादी ढांचे के निर्माण से ही पहुंच संबंधी अंतर्निहित समस्याओं का समाधान नहीं हो सकता। ममता ने कैंसर उपचार के बुनियादी ढांचे में महत्वपूर्ण निवेश की भी घोषणा की। एसएसकेएम एक नए कैंसर देखभाल केंद्र के लिए विशेष उपकरण खरीदेगा, जिसमें दो लिनैक मशीनें, एक सीटी सिम्युलेटर मशीन और एक ब्रैकीथेरेपी मशीन शामिल हैं, जिसके 2025 के अंत तक चालू होने की उम्मीद है।पूरी तरह से चालू होने के बाद, यह केंद्र कैंसर के इलाज के लिए समर्पित 200 बिस्तर प्रदान करेगा। ममता ने कहा-हम मुंबई के टाटा मेमोरियल अस्पताल के सहयोग से अपने राज्य के दो अस्पतालों में कैंसर देखभाल केंद्र स्थापित कर रहे हैं। एसएसकेएम अस्पताल में केंद्र तेज़ी से बन रहा है। दूसरा केंद्र उत्तर बंगाल मेडिकल कॉलेज और अस्पताल में बनेगा।इस दिन मुख्यमंत्री ने रात की पाली में काम करने वाली महिला डॉक्टरों की सुरक्षा चिंताओं का हवाला देते हुए, नए ओपीडी भवन और एसएसकेएम के मुख्य ब्लॉक के बीच एक कनेक्टिंग गैंगवे का भी उद्घाटन किया। उन्होंने सभी अस्पतालों, खासकर मेडिकल कॉलेजों में इसी तरह के कनेक्टिविटी इंफ्रास्ट्रक्चर का अनुरोध किया है। इसके अतिरिक्त, ममता ने एसएसकेएम अधिकारियों को अस्पताल में एक बोन बैंक स्थापित करने का निर्देश दिया।

कीमत और सेवाएं

- सिंगल केबिन : ₹5,000 प्रति दिन
- सिंगल सुइट : ₹8,000 प्रति दिन
- एचडीयू शुल्क : ₹12,000 प्रति दिन
- आईटीयू शुल्क : ₹15,000 प्रति दिन
- ओपीडी सेवाएं : ₹350 प्रति विजिट

दुर्गापूजा को सुरक्षित बनाने के लिए कोलकाता पुलिस की विशेष पहल

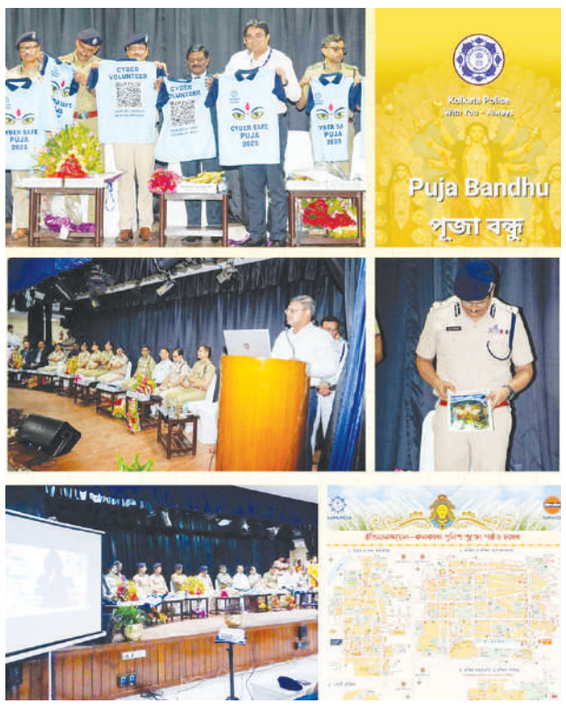

निज संवाददाता : पीटीएस ऑडिटोरियम में एक भव्य कार्यक्रम के माध्यम से दुर्गापूजा को सुरक्षित और संरक्षित बनाने के उद्देश्य से कई महत्वपूर्ण पहलों का शुभारंभ किया गया। इस कार्यक्रम में कोलकाता पुलिस आयुक्त मनोज कुमार वर्मा, आईपीएस, अन्य वरिष्ठ पुलिस अधिकारी तथा इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन, सेबी, आईसीआईसीआई और फेडरल बैंक के अधिकारी उपस्थित थे। यातायात संबंधी पहलपंडाल में भीड़ नियंत्रित करने और नागरिकों की सहायता के लिए ''पूजो गाइड 2025'' और ''स्टूडेंट आइडेंटिटी बैज'' शुरू किए गए हैं। यह पहल भीड़ में सुरक्षा सुनिश्चित करेगी, आवागमन को आसान बनाएगी और नागरिकों को समय पर आवश्यक जानकारी प्रदान करेगी।साइबर सुरक्षा पहलऑनलाइन धोखाधड़ी रोकने और नागरिकों को जागरूक करने के लिए ''साइबरसेफ पूजो कियोस्क'', ''साइबरसेफ पूजो वेबपेज'', ''साइबर वॉलंटियर टी-शर्ट'' और ''साइबरअवेयरनेस लीफलेट'' शुरू किए गए हैं। इनके माध्यम से त्योहार के दौरान नागरिकों को डिजिटल सुरक्षा से जुड़ी आवश्यक सलाह मिलेगी।डिजिटल साथीइसके अलावा, उत्सव के दौरान नागरिकों को रियल-टाइम सहायता और मार्गदर्शन देने के लिए ''पूजो बंधु ऐप'' लॉन्च किया गया है। यह ऐप नागरिकों को अपडेट, मार्गदर्शन और आपातकालीन संपर्क में मदद करेगा।पुलिस प्रशासन की ओर से बताया गया कि इस साल की दुर्गापूजा में नागरिकों की सुरक्षा, साइबर जागरूकता और सुगम यातायात सुनिश्चित करना ही इन पहलों का मुख्य उद्देश्य है।

कोलकाता में साइबर क्राइम ब्रांच के नए दफ़्तर का उद्घाटन

निज संवाददाता : लालबाज़ार के नॉर्दर्न बिल्डिंग में कोलकाता पुलिस के साइबर क्राइम ब्रांच के नए दफ़्तर का औपचारिक उद्घाटन पुलिस आयुक्त मनोज वर्मा ने किया। इस अवसर पर पुलिस के अन्य शीर्ष अधिकारी भी उपस्थित थे।आधुनिक तकनीक और ढाँचे से सुसज्जित यह नया दफ़्तर साइबर अपराधों से निपटने में कोलकाता पुलिस की क्षमता को और बढ़ाएगा। साथ ही, शहर के आम नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने और उन्हें बेहतर सेवाएं प्रदान करने में भी यह अहम भूमिका निभाएगा, ऐसी आशा व्यक्त की गई है।

बिजली के झटके से हुई मौतों पर हाईकोर्ट ने सीईएससी से मांगी रिपोर्ट

निज संवाददाता : कलकत्ता हाईकोर्ट ने शहर में बिजली के झटके से हुई मौतों की श्रृंखला के मद्देनजर सीईएससी से रिपोर्ट मांगी है। गुरुवार को हाईकोर्ट के कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश सौमेन सेन और न्यायमूर्ति अपूर्व सिंह रॉय की खंडपीठ ने स्वतः संज्ञान लेते हुए कहा कि बिजली आपूर्ति कंपनी को बिजली के झटके की घटनाओं पर एक रिपोर्ट पेश करनी होगी। कोलकाता नगर निगम को भी जल निकासी व्यवस्था के संबंध में उठाए गए कदमों पर एक रिपोर्ट पेश करनी होगी। इसके साथ ही, राज्य मृतकों के परिवारों को मुआवजा देने पर भी अपना रुख स्पष्ट करेगा। मामले की अगली सुनवाई 7 नवंबर को होगी। मालूम हो कि सोमवार रात और मंगलवार सुबह हुई भारी बारिश के कारण अकेले कोलकाता में ही बिजली के झटके से आठ लोगों की मौत हो गई। इसके अलावा, दक्षिणी उपनगरों के बिष्णुपुर और नरेंद्रपुर में दो और युवकों की मौत हो गई। सरकारी सूत्रों के अनुसार, राज्य में कुल 10 लोगों की मौत हो चुकी है। मंगलवार को मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने शहर में बिजली के करंट से हुई इतनी मौतों के लिए सीईएससी को ज़िम्मेदार ठहराया था।

पुलिस आयुक्त ने किया पूजा पंडालों का निरीक्षण

निज संवाददाता :कोलकाता के पुलिस आयुक्त मनोज कुमार वर्मा ने आईपीएस, वरिष्ठ अधिकारियों के साथ शहर के कई महत्वपूर्ण दुर्गापूजा पंडालों का निरीक्षण किया।निरीक्षण किए गए पंडालों में थे चेतला अग्रणी क्लब, सुरुचि संघ, बेहाला नूतन दल, केंदुआ शांति संघ, देशप्रिय पार्क, त्रिधारा सम्मिलनी, एकडालिया एवरग्रीन, टाला प्रत्यय और कॉलेज स्क्वायर।इस निरीक्षण का मुख्य उद्देश्य था भीड़ नियंत्रण की तैयारी, अग्निशमन और सुरक्षा व्यवस्था सहित संपूर्ण स्थिति की समीक्षा करना। पुलिस आयुक्त ने कहा-शहरवासी निर्बाध और सुरक्षित रूप से त्योहार का आनंद ले सकें, यही हमारी सबसे बड़ी प्रतिबद्धता है।निरीक्षण के दौरान

पुलिस आयुक्त और अधिकारियों ने विभिन्न पूजा आयोजकों से बातचीत की और आवश्यक निर्देश दिए।

राजडांगा नव उदय संघ का नया आकर्षण: आटे से बनी मां दुर्गा की प्रतिमा

खेल, संस्कृति और सामाजिक सौहार्द का अद्भुत संगम

शोभन चक्रवर्ती

दुर्गा पूजा का मतलब है बंगालियों के जीवन में आनंद, संस्कृति और नित नए प्रयोगों का संगम। इसी कड़ी में इस बार कोलकाता शहर में एक अनोखा आकर्षण देखने को मिल रहा है। यह हैआटे से बनी मां दुर्गा की प्रतिमा। इस अभिनव पहल से जुड़े हैं ईस्ट बंगाल के महिला और पुरुष फुटबॉल टीम के खिलाड़ी। राजडांगा नव उदय संघ, चक्रवर्ती पाड़ा सेक्टर-ए के पंडाल में इमामी हेल्दी एंड टेस्टी के सौजन्य से यह प्रतिमा तैयार की गई है। इसमें खपरैल और मिट्टी के साथ आटा और गेहूं के बीज का इस्तेमाल हुआ है। करीब 15

दिनों तक प्रतिमा निर्माण की प्रक्रिया चली। इस प्रक्रिया के पूरे होने के मौके पर इमामी ईस्ट बंगाल एफसी के अधिकारी संदीप अग्रवाल और सौरव दासगुप्ता मौजूद थे।इसके अलावा कार्यक्रम में उपस्थित थे पुरुष टीम के खिलाड़ी अनवर अली, सौविक चक्रवर्ती, मोहम्मद रशीद और महिला टीम की फाजिला इक्कापुत, रेस्टी नांजीरी, मॉरीन टी. ओकपाला, अबेना ओपोकू, श्रावणी मुर्मू और

बिरसी ओरांव आदि। उनके साथ लोकप्रिय अभिनेत्री प्रियांका सरकार, जो शुरुआत से ही इस पहल का हिस्सा रही हैं, भी उपस्थित थीं। सौविक चक्रवर्ती ने कहा-अनोखी पहल की प्रतिमा और पंडाल से भी बड़ा संदेश है यह। आटे जैसी रोजमर्रा की ज़रूरी चीज़ से ऐसी रचनात्मकता सचमुच अनोखी है। अनवर अली ने कहादुर्गा पूजा स्त्री शक्ति का उत्सव है। महिला टीम के साथ एक ही मंच साझा करना हमारे लिए गर्व की बात है। महिला टीम की फॉरवर्ड फाजिला इक्कापुत का अनुभव और भी भावुक थायह मेरे जीवन की पहली दुर्गा पूजा है। ईस्ट बंगाल की ओर से ऐसी सांस्कृतिक धरोहर का हिस्सा बनना मेरे लिए गर्व की बात है। इमामी के नए उत्पाद 'फ्रेश चक्की आटा' के प्रचार में बनाई गई यह अनोखी प्रतिमा न सिर्फ दर्शकों की उत्सुकता बढ़ा रही है, बल्कि फुटबॉल और बंगालियों के सबसे बड़े त्योहार दुर्गा पूजा के बीच एक खूबसूरत रिश्ता भी जोड़ रही है। यह वास्तव में खेल, संस्कृति और सामाजिक सौहार्द का एक अद्भुत संगम है।

दुर्गा पूजा के मौके पर मेट्रो का बड़ा तोहफा

- सस्ते हो गए स्मार्ट कार्ड
- मेट्रो में 25 सितंबर से नए नियम लागू हो गए

निज संवाददाता : दुर्गा पूजा के मौके पर कोलकाता मेट्रो ने बड़ा तोहफा दिया है। इसके तहत मेट्रो के स्मार्ट कार्ड सस्ते हो गए हैं। इनकी वैधता भी बढ़ गई है। पहले जो कार्ड एक बार पैसे डालने पर एक साल के लिए वैध होता था, अब उसकी वैधता 10 साल तक रहेगी। कोलकाता मेट्रो में 25 सितंबर से नए नियम लागू हो गए हैं। बीते बुधवार को कोलकाता मेट्रो ने एक अधिसूचना जारी कर नए नियमों की जानकारी दी। स्मार्ट कार्ड में होने वाले बदलावों पर एक नज़र सबसे पहले, अब तक मेट्रो स्मार्ट कार्ड खरीदने के लिए लोगों को 80 रुपये की सिक्योरिटी डिपॉजिट रखनी पड़ती थी। अब यह राशि घटाकर 50 रुपये कर दी गई है।दूसरी बात, स्मार्ट कार्ड के लिए कम से कम 150 रुपये खर्च करने पड़ते थे। अब सिर्फ़ 100 रुपये में मेट्रो स्मार्ट कार्ड पा सकते हैं।तीसरा, अब से, स्मार्ट कार्ड खरीदने के दिन से कार्ड 10 साल तक वैध रहेगा। वर्तमान में, यह एक वर्ष के लिए वैध है। पुराने स्मार्ट कार्ड को रिचार्ज करने पर इसकी वैधता 10 वर्ष हो जाएगी। चौथा, नया स्मार्ट कार्ड खरीद के दिन से नहीं, बल्कि पहली बार इस्तेमाल किए जाने के दिन से वैध होगा। पांचवां, स्मार्ट कार्ड पर 5 प्रतिशत अतिरिक्त पैसा मिलेगा। छठा, इसे न केवल काउंटर से, बल्कि एएससीआरएम मशीनों और ऑनलाइन से भी रिचार्ज किया जा सकता है।मेट्रो प्राधिकरण ने अधिसूचना में आगे कहा कि यात्रा की सुविधा के लिए 50 हजार यात्री पहले ही स्मार्ट कार्ड खरीद चुके हैं। अधिकारियों को उम्मीद है कि नए ढांचे में सस्ता होने के कारण खरीदारों की संख्या में और वृद्धि होगी। खासकर त्योहारी सीजन के दौरान, लोग कोलकाता में यात्रा करते समय भीड़ से बचने के लिए मेट्रो से यात्रा करना पसंद करते हैं। यही कारण है कि स्मार्ट कार्ड खरीदने में रुचि बढ़ रही है। परिणामस्वरूप, अधिकारी जनता के लिए छूट की घोषणा करके अधिक लाभ कमाने की उम्मीद कर रहे हैं।

19वीं सदी की अग्रणी नाट्य हस्ती नटी बिनोदिनी को समर्पित है भवानीपुर 75 पल्ली की थीम

निज संवाददाता : इस वर्ष भवानीपुर 75 पल्ली पूजा कमेटी का दुर्गोत्सव 61वें वार्ष में प्रवेश कर रहा है। दक्षिण कोलकाता की प्रमुख थीम पूजाओं में एक उभरते सितारे के रूप में प्रसिद्ध भवानीपुर 75 पल्ली के दुर्गोत्सव कमेटी की ओर से इस वर्ष आकर्षक थीम ''बिनोदिनी'' लगातार लोगों को अपनी ओर आकर्षित कर रहा है। यह थीम 19वीं सदी की अग्रणी नाट्य हस्ती नटी बिनोदिनी को एक भावपूर्ण श्रद्धांजलि है, जिन्होंने बंगाली रंगमंच पर महिलाओं की भूमिका को नए सिरे से परिभाषित किया। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने बीते बुधवार को भवानीपुर 75 पल्ली के भव्य दुर्गा पूजा पंडाल का उद्घाटन किया। मंडप के उद्घाटन समारोह में मदन मित्रा (विधायक), कार्तिक बनर्जी (सामाजिक कार्यकर्ता) एवं पापिया सिंह (पार्षद) भी उपस्थित थे।इस वर्ष 2025 में भवानीपुर 75 पल्ली ने अपने पंडाल को एक लुभावने कथा स्थल में बदल दिया है, जहां नाटकीय कला प्रतिष्ठानों, जटिल सेट

डिज़ाइन, विषयगत वास्तुकला और मनमोहक प्रकाश-ध्वनि कथावाचन के माध्यम से बिनोदिनी की असाधारण यात्रा को जीवंत करने का प्रयास किया गया है।

यहां आने वाले आगंतुकों को उनके जीवन के विभिन्न चरणों से रूबरू कराया जायेगा, जिनमें उनकी साधारण शुरुआत से लेकर स्टारडम तक, सांस्कृतिक दिग्गजों के साथ उनके जुड़ाव और अंततः आध्यात्मिक एकांतवास तक के दृश्य से वे अवगत हो सकेंगे।वर्ष 1862 में जन्मी बिनोदिनी दासी ने सामाजिक कलंक को चुनौती देते हुए बंगाल की सबसे प्रसिद्ध अभिनेत्रियों में से एक बनने का गौरव प्राप्त किया और गिरीश चंद्र घोष के मार्गदर्शन में 80 से अधिक प्रशंसित नाटकों में अभिनय किया। चैतन्य लीला, सितार बोनोबास और मेघनाद वध जैसे क्लासिक नाटकों में उनके शानदार अभिनय ने बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय, रवींद्रनाथ टैगोर और रामकृष्ण परमहंस जैसे दिग्गजों की प्रशंसा अर्जित की। उनकी आत्मकथा अमर कथा कला के क्षेत्र में महिलाओं के संघर्ष और विजय का एक जीवंत ऐतिहासिक प्रमाण है।भवानीपुर 75 पल्ली के सचिव सुबीर दास ने कहा-हमें बेहद गर्व है कि मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने हमारे दुर्गोत्सव के 61वें वर्ष में दुर्गापूजा पंडाल का उद्घाटन किया। इस वर्ष की थीम, बिनोदिनी न केवल एक कलात्मक श्रद्धांजलि है, बल्कि बंगाल के सांस्कृतिक परिदृश्य को बदलने वाली महिलाओं की शक्ति और दृढ़ता की भी याद दिलाती है।

इस पंडाल के माध्यम से हमारा उद्देश्य उनकी कहानी को जीवित रखना और आने वाली पीढ़ियों को उनके बारे में जानकारी देकर उन्हें प्रेरित करना है।इस वर्ष के पंडाल का कलात्मक संयोजन अभिजीत नंदी और मूर्ति परिमल पाल द्वारा बनाया गया है। मंडप का बहुस्तरीय डिजाइन और प्रतीकात्मक रूप, बिनोदिनी के जीवन के विभिन्न चरणों-उनके संघर्षों, विजयों और आध्यात्मिक जागृति को दर्शाता है, जबकि देवी दुर्गा की मूर्ति उनकी अदम्य भावना को दर्शाती है, जो परंपरा को परिवर्तन के सार के साथ मिश्रित करती है।

Page-4_ARO KHABAE PAGE-1.qxd 9/25/2025 6:27 PM Page 1

संपादकीय

फ़िलिस्तीन राज्य को मान्यता देने वाले देशों की बढ़ती फेहरिस्त

जैसे-जैसे इज़राइल गाजा शहर में एक घातक ज़मीनी आक्रमण कर रहा है, वैसे-वैसे पिछले दो वर्षों के युद्ध में उसके साथ डटे रहे ज़्यादा से ज़्यादा देश फ़िलिस्तीन राज्य को मान्यता दे रहे हैं। इसी हफ़्ते, दस देशों-ब्रिटेन, फ़्रांस, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, बेल्जियम, पुर्तगाल, लक्ज़मबर्ग, माल्टा, मोनाको और अंडोरा-ने संयुक्त राष्ट्र महासभा सत्र के दौरान कई बैठकों और घोषणाओं के ज़रिए फ़िलिस्तीन को एक राज्य के रूप में मान्यता देने की अपनी ऐतिहासिक अनिच्छा को तोड़ा है। ये देश दुनिया के अधिकांश देशों-ख़ासकर लगभग पूरे एशिया और अफ़्रीका-के साथ फ़िलिस्तीन को मान्यता देने में शामिल हो गए हैं। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि मान्यता की इस लहर की इज़राइल और उसके सबसे करीबी सहयोगी, संयुक्त राज्य अमेरिका ने आलोचना की है, और साथ ही गाजा में हर हफ़्ते सैकड़ों नागरिकों की हत्या के बावजूद प्रतीकात्मकता का दिखावा करने के आरोप भी लगे हैं। यह सच है कि ये घोषणाएं न तो अकेले इज़राइल द्वारा गाजा में फ़िलिस्तीनियों के नरसंहार को रोक पाएँगी और न ही पश्चिमी तट में उसकी खुलेआम विस्तारवादी नीतियों को। फिर भी, ये मान्यताएं इस तथ्य की ओर इशारा करती हैं कि इज़राइल के कुछ सबसे वफ़ादार मित्रों की सरकारें भी अब अपने ही देशों में उस जनमत की अवहेलना नहीं कर सकतीं जिसे इतिहास शायद उसका पहला लाइवस्ट्रीम नरसंहार मान सकता है।अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने संयुक्त राष्ट्र महासभा में बोलते हुए इज़राइल के इस तर्क को दोहराया कि फ़िलिस्तीनी राज्य का समर्थन करना हमास को 7 अक्टूबर, 2023 को इज़राइल पर हुए हमले के लिए एक उपहार था जिसने वर्तमान युद्ध को जन्म दिया। फिर भी, वैश्विक दक्षिण में, यह दावा जाना-पहचाना और खोखला लगेगा। यह ठीक वही था जो यूरोप में कई लोगों ने पूर्व उपनिवेशों की स्वतंत्रता का विरोध करने के लिए तर्क दिया था जहां उन्हें सशस्त्र विद्रोह का सामना करना पड़ा था। निस्संदेह, ये सरकारें और भी बहुत कुछ कर सकती थीं। उदाहरण के लिए, ब्रिटेन अभी भी इज़राइल द्वारा जेट और अन्य हथियार प्रणालियों में इस्तेमाल किए जाने वाले पुर्जों का निर्यात करता है। ये देश इज़राइल पर आर्थिक प्रतिबंध लगा सकते हैं जैसे उन्होंने यूक्रेन युद्ध को लेकर रूस पर लगाए हैं। हालांकि, ये मान्यताएं दुनिया की ओर से एक संदेश हैं कि इज़राइल के टैंक, मिसाइल और बम दो-राज्य समाधान को खत्म करना आसान नहीं पाएंगे। 1980 के दशक की शुरुआत में, पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन ने रंगभेदी दक्षिण अफ़्रीका को अपना एक वफ़ादार सहयोगी बताया था और उसके ख़िलाफ़ प्रतिबंधों की मांग को खारिज कर दिया था। लेकिन अंततः अमेरिकी कांग्रेस ने आगे बढ़कर लोकप्रिय अमेरिकी भावना के अनुरूप प्रतिबंध लगा दिए। इसी तरह, फ़िलिस्तीन भी दुनिया के लिए एक परीक्षा का विषय बन गया है। राज्य का दर्जा देना एक महत्वपूर्ण पहला कदम है।

लैंगिक असमानता बनाम समावेशी समाज

डॉ. ज्योति सिडाना

यह एक तथ्य है कि मनुष्य में पुरुष एवं महिला दो श्रेणी है। पुरुषसत्ता की विचारधारा के अनुसार पुरुष सृजनात्मकता, शक्ति, जीवन एवं शुद्धता का संकेतक है जबकि महिला कमजोरी, मृत्यु, अशुद्धता की प्रतीक है। सामान्यतः पूर्व के समाजों में यह तर्क दिया जाता था कि महिलाओं में निर्णय लेने की क्षमता की कमी, शिक्षा की कमी, आर्थिक रूप से परनिर्भरता ऐसे पक्ष हैं जिनके कारण वे दमन का शिकार होती हैं। 21वीं सदी तक आते-आते महिलाओं में शिक्षा, आर्थिक आत्मनिर्भरता, स्वतंत्रता, निर्णय लेने की क्षमता का व्यापक विस्तार हुआ परन्तु इन सबके बावजूद भी उनके प्रति लोगों की सोच आज भी दोयम दर्जे की ही है। नारीवादी लेखिका सीमेन द बुआ का तर्क है कि पुरुष स्वयं तो किसी भी रूप में अपने आप को प्रस्तुत कर सकता है और उसे स्वाभाविक प्रस्तुतीकरण में कोई झिझक नहीं होती परंतु महिला को वह सांस्कृतिक दृष्टि से बाध्य करता है कि वह स्वाभाविक न हो और अपने को पुरुषसत्तात्मकता की सांस्कृतिक प्रणाली से नियंत्रित करें। पत्नी, पुत्री, बहन एवं मां की भूमिका में पुरुष उसे इतना अधीनस्थ बना लेता है कि वह महिला पतन और भाग्य के ढांचे में बंध जाती है। स्वतंत्रता की बात करना उसके लिए अपराध हो जाता है। परिवार में उसका समाजीकरण ही कुछ इस तरह किया जाता है कि उसे किन प्रथागत व्यवहारों का पालन करना है, शरीर कितना ढकना या दिखाना है, किन खिलौनों से खेलना है, कौन से कपडे पहनने हैं, कितना हंसना है और किस तरह बोलना या चलना है इत्यादि। आक्रामकता, रोना, चिल्लाना, हंसना, सुबकना जैसे व्यवहार धीरे-धीरे पुरुष एवं स्त्रियों के संदर्भ में बदलते जाते हैं। यहां तक की भाषा कैसी हो, हाव भाव कैसे हो इत्यादि पक्ष भी लैंगिक भेदभाव का संकेत देने लगते हैं। कितने आश्चर्य की बात है कि मनुष्य आदिम समाज से आधुनिक और उत्तर-आधुनिक समाज में और पत्थर युग से विकसित प्रौद्योगिकी के युग में प्रवेश कर चुका है जहां सब कुछ बदल गया परन्तु नहीं बदला तो लोगों की मानसिकता विशेष रूप से महिलाओं के प्रति समाज की संकीर्ण सोच आज भी कमोबेश पहले जैसी ही है। विश्व आर्थिक मंच द्वारा जारी वैश्विक लैंगिक अंतर सूचकांक-2025 के अनुसार लैंगिक समानता में भारत 64.1 फीसद स्कोर के साथ 148 देशों में 131वें स्थान पर है जो पिछले वर्ष की तुलना में दो स्थान नीचे है। रिपोर्ट में भारत की शैक्षणिक उपलब्धि, स्वास्थ्य और जीवनयापन में सुधार पर प्रकाश डाला गया है, लेकिन राजनीतिक सशक्तिकरण में गिरावट और आर्थिक भागीदारी में लगातार चुनौतियों को दर्शाया गया है। सवाल यह उठता है कि क्या

महिलाएं कभी पुरुषों के बराबर आर्थिक स्तर पर पहुँच पाएंगी, क्या कभी महिलाओं के घरेलू काम-काज, बच्चों की देखभाल जैसे कार्यों को आर्थिक गतिविधियों की श्रेणी में देखा जायेगा, और क्या पुरुष उनके मानसिक बोझ को बांटने में बराबरी कर पाएंगे। इन सवालों पर दशकों से चर्चा होती रही है फिर भी प्रत्येक समाज में प्रत्येक युग में लैंगिक भिन्नता बनी हुयी है। इस दिशा में ऐसा क्या किया जाए जो सदियों से चली आ रही लैंगिक भिन्नता समाप्त हो जाए। हाल ही में प्रकाशित दो समाजशास्त्रियों कॉर्डेलिया फाइन की पैट्रिआर्की इंक और एलिसन डैमिंगर की व्हाट्स ऑन हर माइंड नमक पुस्तकें इन पक्षों को नए दृष्टिकोण से देखने और समाधान निकालने का सुझाव देती हैं।कॉर्डेलिया फाइन तर्क देती हैं कि कार्यस्थल में लैंगिक असमानता एक संरचनात्मक घटना है, न कि कोई व्यक्तिगत मुद्दा। उनका तर्क है कि महिला एवं पुरुष के बीच यह असमानता जन्मजात भिन्नता के कारण नहीं है बल्कि उस व्यवस्था के प्रति एक तर्कसंगत प्रतिक्रिया है जो महिलाओं के लिए चुनौतीपूर्ण करियर और पारिवारिक जीवन में संतुलन बनाना मुश्किल कर देती है। उनका मानना है कि महिलाओं के सन्दर्भ में 'भिन्न लेकिन समान' का जो तर्क दिया जाता है वह स्वीकार्य नहीं है क्योंकि यह कहना कि महिलाएं अपनी अंतर्निहित प्रवृत्तियों के कारण कम वेतन वाली नौकरियों को स्वतंत्र रूप से चुनती हैं गलत है बल्कि जन्म से महिलाओं को पुरुषों की बराबरी न करने और कुछ विशिष्ट एवं सीमित करियर विकल्प चुनने की शिक्षा ही दी जाती रही है। ऐसा माना जाता रहा है कि उच्च परिस्थिति और उच्च वेतन वाली नौकरियों में लंबे समय तक काम करने और पूर्ण प्रतिबद्धता की आवश्यकता होती है, जो महिलाए नहीं कर सकती अगर वे ऐसा करती हैं तो उन्हें परिवार के देखभाल की ज़िम्मेदारियों से विमुख होना पड़ेगा जिसकी इजाज़त पुरुषसत्तात्मक समाज कभी नहीं दे सकता। उनका तर्क है कि हम लैंगिक असमानता को तब तक पूरी तरह से ख़त्म नहीं कर सकते जब तक हम अपने काम करने के तरीके, शासन करने के तरीके और पुरुषों और महिलाओं के बारे में अपनी सोच में परिवर्तन नहीं लाते।देखा जाए तो जीवन क्या है, को महिला कभी पहचान ही नहीं पाती क्योंकि उसे स्वतंत्र परिवेश से पृथक रखा जाता है और निर्भरता से जीवन में संतुष्टि मिलती है, का विचार उसकी चेतना का हिस्सा बना दिया जाता है। वह रसोई, कपड़े, पति, बच्चे, और पति की जॉब इत्यादि पर तो चर्चा कर सकती है लेकिन अपने अधिकार, इच्छाओं, और पसंद पर खुलकर बोलने का साहस नहीं कर सकती। क्योंकि उसे सदैव भावनाओं का प्रतिनिधित्व करने और परिवार का निर्माण करने वाली इकाई के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। वास्तविकता में ऐसा नहीं कि महिलाएं तुलनात्मक रूप से कमतर हैं। एलिसन डैमिंगर तर्क देती हैं कि महिलाएं पुरुषों की तुलना में अधिक संज्ञानात्मक श्रम करती हैं, यहां तक कि उन जोड़ों में भी जो समानता की आकांक्षा रखते हैं महिलाएं अधिक संज्ञानात्मक श्रम करती नजर आती हैं। संज्ञानात्मक श्रम से तात्पर्य योजना बनाने, संगठित करने, प्रबंधन करने और समस्या-समाधान करने के अदृश्य मानसिक प्रयास से है, जो शारीरिक कार्यों से अलग है। इसमें जीवन के विभिन्न क्षेत्रों, विशेष रूप से घरेलू कार्य, बच्चों की देखभाल और रिश्तों के लिए आवश्यकताओं का पूर्वानुमान लगाना, निर्णय लेना और परिणामों की निगरानी करना शामिल है और इस तरह के कार्यों का भार अक्सर महिलाओं पर पड़ता है, जिससे उनमे संभावित तनाव बढ़ जाता है। इस बात से इंकार नहीं कर सकते कि महिलाएं पारिवारिक ज़िम्मेदारियों का मानसिक कार्यभार असमान रूप से वहन करती हैं। खाना बनाना, बर्तन धोना, घर को व्यवस्थित करना, साफ-सफाई करना, महिलाओं का ही मुद्दा क्यों माना जाता है। क्यों उनके इन कामों को इनमे अंतर्निहित मूल्यों के अनुसार मूल्यांकित नहीं किया जाता। आज बड़ी संख्या में महिलाएं वेतनभोगी या आर्थिक इकाई के रूप में अपना योगदान कर रही हैं फिर भी वे परिवार का ज़्यादातर मानसिक बोझ उठाती हैं। यह भी एक तथ्य है कि स्त्रियों को उनकी कमजोर बुद्धि का बहाना बना कर अधिकारों से वंचित करने की मंशा सभी समाजों का यथार्थ रहा है। लिंग के आधार पर श्रम का विभाजन लैंगिक भेदभाव का ही एक उदाहरण है।

जानें अपना राशिफल

मेष

सम्भावना भरा समय हो सकता है इसलिए ज्यादा से ज्यादा काम करने की आवश्यकता है, कोई बहुत बड़ा काम करने का अवसर मिल सकता है, श्रीसूक्त का पाठ करे सफलता मिलेगी, निले वस्त्र नहीं धारण करे।

वृषभ

कोई बहुत दिनों से रुका हुआ काम आगे बढ़ सकता है। प्रयास करें, कोई वाहन खरिदने का विचार हो सकता है, अपनी सोच सकारात्मक रखने की आवश्यकता है, मन शान्त रखें, गुड़ गाय को खिलायें सफलता मिलेगी।

मिथुन

व्यापार करने वाला समय हो सकता है इसलिए सिर्फ काम करने पर ध्यान रखने की आवश्यकता है, किसी पर ज्यादा भरोसा परेशानी का कारण बन सकता है सावधान रहे, मन स्थिर रखें, गहरे वस्त्र नहीं धारण करें।

कर्क

सद्भावना रखकर काम करने वाला समय हो सकता है, किसी नये व्यक्ति से काम आगे बढ़ सकता है। प्रयास करें, पूरी नैतिकता से काम करने की आवश्यकता है, कोई अधूरा काम पूरा हो सकता है, मन प्रसन्न रहेगा।

सिंह

सोच-विचार करके काम करने वाला समय हो सकता है, किसी के बहकावे में आने से बनता काम बिगड़ सकता है, अपनी बुद्धिमानी दिखाने की आवश्यकता है, आपसी प्रेम बनाये रखें।

कन्या

आर्थिक मंदी वाला समय हो सकता है इसलिए सिर्फ काम करने पर ध्यान रखने की आवश्यकता है, किसी के चक्कर में आने से बनता काम बिगड़ सकता है, बिना काम बाहर नहीं जायें, मन वश में रखें।

तुला

अहंकार वाला समय हो सकता है इसलिए जो भी काम कर रहे हैं किसी से राय लेकर ही करें, कोई परिवार का सदस्य आपका समय खराब कर सकता है। सावधान रहें, पानी में गुड़ डालकर सूर्य को अर्ध्य दें लाभ अवश्य होगा।

वृश्चिक

लक्ष्य प्राप्ति वाला समय हो सकता है इसलिए ज्यादा से ज्यादा काम करने पर ध्यान रखने की आवश्यकता है। कोई बहुत दिनों से रुका हुआ काम आगे बढ़ सकता है, मन प्रसन्न रहेगा, हरे वस्त्र नहीं धारण करें।

धनु

अच्छे अवसर मिलने वाला समय हो सकता है, कोई रुका हुआ जमीन का काम आगे बढ़ सकता है। प्रयास करें, किसी पर भरोसा करके काम करने की आवश्यकता है, आपसी सहमति बनाये रखें।

मकर

मान मर्यादा वाला समय हो सकता है इसलिए जो भी काम कर रहे हैं फायदा अवश्य होगा, अचानक धन लाभ भी हो सकता है, परिवार के लोग पूरा साथ दे सकते हैं, आपसी प्रेम बनाये रखें, देवी आराधना करें।

कुंभ

सहायक समय हो सकता है इसलिए ज्यादा से ज्यादा काम करने पर ध्यान रखने की आवश्यकता है, कोई चमत्कारी काम बन सकता है, जीवन-साथी पूरा साथ दे सकते हैं, आपसी सहमति बनाये रखें, मन शान्त रखें।

मीन

स्नेह भरा समय हो सकता है इसलिए जो भी काम कर रहे हैं फायदा अवश्य होगा, अचानक धन लाभ भी हो सकता है, किसी अन्य व्यक्ति से काम आगे बढ़ सकता है प्रयास करें, हरी सब्जी किसी गरीब को दें, लाभ अवश्य होगा।

अपनी पहचान से क्यों अनजान?

कल सुहानी की गणित की परीक्षा है और उसे डर है कि वह परीक्षा में आए सवाल हल नहीं कर पाएगी। वैसे तो सुहानी गणित में बहुत होशियार थी, पर बीमार होने के कारण उसकी पिछली कुछ परीक्षाएँ अच्छी नहीं हुई। इसलिए उसे लगने लगा कि वो गणित में अच्छी नहीं है।वह उदास और चिंतित होकर अपने कमरे में बैठी थी और मदद के लिए अपने दोस्त नचिकेता को याद कर रही थी। तभी उसके कमरे में खिड़की से एक फ्लाइंग टॉय-कार आई। उस कार में नचिकेता बैठा हुआ था। नचिकेता ने अपना काला चश्मा निकालते हुए सुहानी से पूछा, ''क्या बात है सुहानी, इतनी परेशान क्यों हो?''

सुहानी ने अपनी परेशानी नचिकेता को बताई।''चलो तुम्हारी चिंता दूर करने के लिए, तुम्हें एक कहानी सुनाता हूं,'' नचिकेता ने कहा। तो बच्चों, आओ हम भी इस रोचक कहानी का मज़ा लें। एक दिन एक छोटी शेरनी की माँ उसे मांद में छोड़कर उसके लिए खाना लाने गई। खाना ढूंढने में उसे ज़रा देर हो गई। छोटी शेरनी को अपनी माँ की चिंता हुई और वह उसे ढूंढने मांद के बाहर चली गई। अँधेरे में शेरनी की बच्ची रास्ता भटक गई और भेड़ों के बाड़े में जा पहुँची। वहाँ बहुत सारी भेड़ें रहती थीं। शेरनी अब भेड़ों के साथ ही रहने लगी।

वह भेड़ों की तरह ही बर्ताव करने लगी। वो ना तो शेरनी की तरह दहाड़ती, ना तेज़ दौड़ती और ना ही ऊँची छलाँग लगाती। भेड़ों के बीच रहकर वह खुद को एक भेड़ ही समझने लगी थी। एक बार वह दूसरी भेड़ों के साथ घास चरने गई तभी वहाँ शेरनी की माँ आ गई। सभी भेड़ें डर कर इधर-उधर भागने लगीं पर शेरनी वहीं खड़ी रही। उसने अपनी माँ को पहचान लिया और दौड़कर उसके गले लगी। शेरनी को याद आ गया कि वह कोई भेड़ नहीं, एक शेरनी है। शेरनी और उसकी माँ एक साथ दहाड़े। शेरनी को अपनी असली ताकत का एहसास हुआ।नचिकेता की कहानी सुन कर सुहानी का मनोबल बढ़ गया। उसने एक नई ऊर्जा का अनुभव किया और खुद को परीक्षा के लिए तैयार करने के लिए फिर से प्रेरित

गरीब आदमी और अमीर आदमी

एक गरीब मोची और एक धनी व्यापारी, दोनो पड़ोसी थे। मोची के घर में ही जूते चप्पल सीने की छोटी सी दुकान थी। काम करते-करते वह अक्सर मौज में आकर गाने लगता। वह बहुत निश्चिंत मस्तमौला आदमी था। उसे कभी अपने घर के दरवाजे खिड़कियाँ बंद करने की जरूरत नही महसूस हुई। वह रात को भगवान की पूजा करता और मजे से सो जाता। अमीर आदमी इस गरीब, हँसमुख मोची की ओर ईर्ष्याभरी नजर से देखा करता। गरीब होने के बावजूद उस मोची को किसी बात की चिंता नही थी। जबकि अमीर आदमी को तरह-तरह की चिंताएँ सताती रहतीं थीं। गाना-गुनगुनाने की बात तो दूर वह खुलकर हँस भी नही सकता था। उसे हमेशा अपनी तथा अपने धन की रक्षा की चिंता सताती रहती थी। रात को वह अपने मकान के सारे दरवाजे खिड़किया बंद कर लेता था। फिर भी, उसे चैन की नींद नही आती थी ! एक दिन अमीर आदमी ने मोची को अपने घर बुलाया। उसने उसे पाँच हजार रूपए दिए और कहा, ''लो, ये पैसे रख लो। इन्हे अपने ही पैसे समझो। इन पैसो को मुझे लौटाने की जरूरत नही है।'' इतने पैसे पाकर गरीब आदमी को पहले तो बड़ी खशी हुई पर जल्दी ही इन पैसो ने उसके शांति और निश्चिंत जीवन में खलल पैदा कर दी। पैसे पाने पर वह जीवन में पहली बार उसने अपने घर का दरवाजा और खिड़कियाँ बंद कर उनमें चटखनी लगाई। यह देखने के लिए कि पैसे सुरक्षित हैं या नही रात को कई बार उसकी नींद टूटी। दूसरे दिन बडे. सवेरे गरीब मोची अपने धनी पड़ोसी के घर पहुँचा। उसने व्यापारी को पाँच हजार रूपए लौटाते हुए हाथ जोड कर कहा, ''सेठजी, मेहरबानी करके आप अपना यह पैसा वापस ले लीजिए। इन पैसो ने तो मेरी रात की नींद हराम कर दी। मैं हँसना गाना सब भूल गया।''

शिक्षा -पैसे से हर प्रकार की खुशी नही प्राप्त की जा सकती।

हल करो हीरो बनो

1. प्रतिवर्ष ''विश्व मधुमक्खी दिवस किस तारीख को मनाया जाता है?
(क) 19 मई को (ख) 20 मई को
(ग) 22 मई को (घ) 16 मई को
2. कौन व्यक्ति हाल ही में, भारतीय एयरलाइन कम्पनी के नए बने है?
(क) मार्क जेनिस (ख) गणेश गौतम
(ग) पीटर एल्बर्स (घ) राजीव शुक्ला
3. कौन व्यक्ति हाल ही में, भारत के प्रमुख शेयर बाजार के नए चेयरमैन बने है?
(क) एसएस मुंद्रा (ख) एन स्वामीनाथन
(ग) एल चिदंबरम (घ) केके सलूजा
4. अजन्ता की गुफाएं कहाँ स्थित हैं?
(क) उड़ीसा (ख) मध्य प्रदेश
(ग) महाराष्ट्र (घ) केरल
5. सालारजंग संग्रहालय कहाँ स्थित है?
(क) मुम्बई (ख) हैदराबाद
(ग) जयपुर (घ) लखनऊ
6. शक कलेण्डर का पहला महीना होता है?
(क) चैत्र (ख) भाद्रपद
(ग) माघ (घ) वैशाख

(उत्तर इसी अंक में)

माथापच्ची 11

2			3	7		6		
			1		2			
	9	1						3
	4			1	7		5	
	8	2				1	7	
	1		4	6			9	
8						2	3	
			9		5			
		5		2	6			9

नियम : प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक अंक भरे जाने आवश्यक है, इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है। आड़ी एवं खड़ी पंक्ति में एवं 3X3 के वर्ग में अंक की पुनरावृत्ति न हो, पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते। उत्तर अगले अंक में

माथापच्ची 10 का हल

7	3	8	9	6	1	5	2	4
6	2	1	7	4	5	8	9	3
4	9	5	8	3	2	7	1	6
9	5	4	2	1	6	3	8	7
3	8	2	4	9	7	6	5	1
1	7	6	5	8	3	2	4	9
2	6	3	1	5	9	4	7	8
8	1	7	3	2	4	9	6	5
5	4	9	6	7	8	1	3	2

मार लो मुस्की

एक शराबी दारू पी पी कर मर गया
लेकिन उसकी दारू के प्रति श्रद्धा तो देखो
वो मर के भी यह कह गया
शराब तो ठीक थी! पर मेरा लिवर ही कमज़ोर निकला

⏩⏩⏩⏩

एक शराबी साधू से टकरा गया तो साधू बोला: अरे मूर्ख, मैं तुझे श्राप देता हूं
शराबी: बाबाजी रुको, मुझे गिलास ले आने दो।

⏩⏩⏩⏩

उपदेशक: अगर गधे को शराब और पानी दोनों पीने को दिये जाये तो गधा क्या पियेगा
शराबी: जाहिर है पानी पियेगा
उपदेशक: क्यों?
शराबी: क्योंकि वो गधा है।

⏩⏩⏩⏩

4.शराबी को शुद्ध दारू पीता देख अमेरिकन बोला- पानी तो मिला लो।
शराबी- हम इंडियन हैं इतना पानी तो दारू देख के ही मुंह में आ जाता है।

⏩⏩⏩⏩

5.पुलिस (शराबी से)- रात के 1 बजे तुम कहां जा रहे हो?
शराबी (पुलिस से)- मैं शराब पीने के दुष्परिणाम पर भाषण सुनने जा रहा हूं।
पुलिस (शराबी से)-इतनी रात में तुम्हे कौन भाषण देगा?
शराबी- मेरी बीवी।

⏩⏩⏩⏩

एक शराबी एयरपोर्ट के बाहर खड़ा था। एक वर्दीधारी युवक उधर से गुजरा। शराबी ने उससे कहा एक टैक्सी ले आओ।
युवक - मैं पायलट हूं, टैक्सी ड्राइवर नहीं।
शराबी- नाराज क्यों होते हो भाई? तो एक हवाई जहाज ले आओ।

⏩⏩⏩⏩

शराबी: गरम क्या है?
वेटर: चाउमीन.
शराबी: और गरम?
वेटर: सूप.
शराबी: और गरम?
वेटर: उबलता पानी.
शराबी: और गरम
वेटर: आग का गोला है साले।
शराबी: लेकर आओ, बीड़ी जलानी है।

⏩⏩⏩⏩

पंजाबी शादी की पार्टी में डीजे ने पूछा- कब तक बजाना है?
मेजबान- 8-10 पैग तक बजा लो, उसके बाद तो ये सब जनरेटर की आवाज पर भी नाच लेंगें।

⏩⏩⏩⏩

शराबी दरवाजे पे दस्तक देता है? उसकी बीवी दरवाजा खोलती है ।
शराबी-कौन हैं आप? बीवी- मुझे भूल गए।
शराबी - नशा हर गम को भुला देता है बहन

⏩⏩⏩⏩

पियक्कड़ों ने दारू पीके एक टैक्सी रोकी और कहा- चल।
टैक्सी चालक ने गाड़ी शूरू की और फिर बंद कर दी
बोला- ये लो साब हम पहुँच गए
पहले ने उसे पैसे दे दिए
दूसरे ने बोला... धन्यवाद
तीसरे ने एक थप्पड़ दिया और बोला- आराम से चलाया कर ...मरवा देता आज.

⏩⏩⏩⏩

एक शराबी लेट कर गाने गा रहा था .. 2-3 गाने गा कर वो उलटा लेटकर गाने लगा..
दूसरा शराबी: यार उलटा लेट कर गाने क्यूं गाने लगा।
शराबी: साइड थी अब बी साइड है।

⏩⏩⏩⏩

page-5_ARO KHABAE PAGE-1.qxd 9/25/2025 6:29 PM Page 1

आसनसोल- शिल्पांचल में दुर्गापूजा पंडालों की धूम

अक्षरधाम मंदिर की तर्ज पर बना धेमोमेन में पूजा पंडाल

रविंद्र नगर दुर्गा पूजा उन्नयन समिति

आसनसोल के अपकार गार्डेन दूर्गापूजा पंडाल

कोलियरी क्षेत्र की सबसे चर्चित दुर्गापूजा पंडालों में से एक धेमोमेन कोलियरी में बना पूजा पंडाल

आठ हजार पौधों से तैयार किया गया है यह अनोखा पंडाल

चितरंजन के एरिया सिक्स दुर्गोत्सव हर साल अपनी नयी थीम से सुर्खियाँ बटोरता है

आसनसोल। धेमोमेन कोलियरी दुर्गा पूजा समिति इस बार अपनी स्थापना के 55 साल पूरे कर रही है। और इस खास मौके पर पंडाल का थीम रखा गया है भव्य अक्षरधाम मंदिर।करीब 25 कारीगर, नदिया के नवद्वीप से आए हैं और पिछले तीन महीने से लगातार पंडाल निर्माण में जुटे हैं। फाइबर, प्लाईवुड और बाँस से तैयार हो रहा यह पंडाल बारिश के बावजूद लगातार आकार ले रहा है।प्रतिमा तैयार की है आसनसोल महिषीला के प्रसिद्ध मूर्तिकार रंजीत पाल ने, जिन्हें राज्य सरकार सम्मानित भी कर चुकी है। पूजा का उद्घाटन त्रितीया तिथि को ईसीएल के सीएमडी सतीश झा करेंगे।इस बार सबसे बड़ा आकर्षण होगा चंदननगर की रोशनी। विशेष लाइटिंग के जरिए ऑपरेशन सिंदूर की सफलता को दिखाया जाएगा। वहीं छोटे बच्चों के लिए अलग से सजावट की गई है। पंडाल की दीवारें और शिखर रोशनी से नहा उठेंगे।पूजा समिति की कमान कोलियरी के अभिकर्ता सुरेन्द्र कुमार केरो संभाल रहे हैं। कार्यकारी अध्यक्ष रोहित नोनिया हैं, जबकि सचिव अरविन्द कृष्ण दास हैं। कोषाध्यक्ष अरुप बनर्जी और सहायक सचिव बिनोद सिंह को बनाया गया है।लगातार पिछले तीन साल से यह पूजा पुरस्कार जीत रही है। कभी मुंबई के ताज होटल, कभी ट्विन टावर और कभी बुर्ज खलीफा की थीम पर पंडाल सजाए जा चुके हैं।करीब 55 साल पहले जब पूजा की शुरूआत हुई थी तब यहाँ पांच-छह हजार मजदूर काम करते थे। मान्यता थी कि माँ दुर्गा की पूजा से खदानों में बड़ी दुर्घटनाओं से बचाव होगा। अब संख्या घटकर लगभग छह सौ रह गई है।इस साल का बजट करीब 40 लाख रुपये है। परंपरा के मुताबिक, कर्मचारियों के एक दिन का वेतन ही पूजा का मुख्य साधन है।समिति के सहायक सचिव बिनोद सिंह का कहना है। यह पूजा सिर्फ आस्था का नहीं, बल्कि श्रमिकों की एकजुटता और भाईचारे का प्रतीक है। जिस भावना से इसे शुरू किया गया था, वही आज भी कायम है।तो इस बार धेमोमेन कोलियरी में अक्षरधाम मंदिर की झलक दिखेगी और चंदननगर की रोशनी इस पूजा को बनाएगी खास।

बटोरने वाला यह पंडाल इस बार एक खास संदेश दे रहा है– एक पेड़, एक प्राण। करीब साढ़े सात से आठ हजार पौधों से तैयार किया गया है यह अनोखा पंडाल। पाँच महीनों तक पूजा समिति के सदस्यों ने इन पेड़ों की देखभाल की और आज यह पंडाल हर तरफ से हरियाली का संदेश दे रहा है।देवी प्रतिमा भी थीम के अनुरूप खास रूप में सजाई गई है। मिट्टी से बनी यह प्रतिमा पत्तों से ढकी हुई प्रतीत होती है, मानो माँ दुर्गा स्वयं प्रकृति की गोद में विराजमान हों।कुल 21 तरह के पेड़-पौधों का इस्तेमाल यहाँ किया गया है–जिनमें सजावटी और फलदार पौधे जैसे पत्ताबहार, एरिका, जवा और अमरूद शामिल हैं।पंडाल के संरक्षक बप्पा कुंडु और महासचिव सुशांत मंडल का कहना है की कोरोना काल में हमने ऑक्सीजन संकट की भयावहता को करीब से देखा। इसलिए इस थीम के जरिए हम लोगों को पेड़ लगाने और पर्यावरण बचाने का संदेश देना चाहते हैं। पूजा के बाद हर परिवार को एक-एक पौधा उपहार में दिया जाएगा।चिरंजन के एरिया सिक्स दुर्गोत्सव हर साल अपनी नयी थीम से सुर्खियाँ बटोरता है। इससे पहले यहाँ अखबार से मंडप बनाकर डिजिटल युग में प्रिंट मीडिया की अहमियत पर रोशनी डाली गई थी।

पूजा बोनस की मांग पर एसएसआई कोलयरी मे किया गया प्रदर्शन

जामुड़िया। ईसीएल मे कार्य करने वाले श्रमिकों के लिए पुजा बोनस की मांग पर एसएसआई कोलयरी मे किया गया प्रदर्शन` ईसीएल के सातग्राम-क्षीपुर क्षेत्र के शिवडागा एसएसआई कोलियरी में पुजा बोनस की भुगतान जल्द से जल्द करने की मांग पर मंगलवार को सीटु, एचएमएस एवम् आईएनटीटीयुसी युनियनो ने जल्द से जल्द पुजा बोनस देने की मांग पर जोरदार विरोध प्रदर्शन किया गया` वही इसके बारे में जानकारी देते हुए सीटु नेता बिरेंद्र माहतो ने इसके बारे में जानकारी देते हुए उन्होंने ने कहा कि बिते सोमवार को ये तीनों युनियन मिलकर हमलोगों ने एक बैठक किया था और हमलोगों ने यह निर्णय लिया था कि अब पुजा में कुछ ही दिनों शेष बचे हुए हैं प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी पुजा से पहले जो हमारा पुजा बोनस का हक है सभी श्रमिकों को तुरंत मुहैया कराना होगा या फिर एक लाख रुपए एडवांस के तौर पर पुजा बोनस दिया जाय अन्यथा हमलोग इसके लिए बड़े अंदोलन पर उतरेंगे` इस मौके पर बिरेंद्र माहतो सुभान मियां रामाधार हरिजन सीतल चक्रवर्ती भोला कुमार बिनोद यादव परदेशी राम रामकुमार नोनिया इस विरोध प्रदर्शन में शामिल थे ।

ईसीएल : कुनुस्तोड़िया क्षेत्र में त्रिपक्षीय संरक्षा बैठक हुई

कुनुस्तोड़िया क्षेत्रीय प्रबंधन, डीजीएमएस और यूनियन के प्रतिनिधि रहे उपस्थित

जामुड़िया। ईसीएल के कुनुस्तोड़िया क्षेत्र के सम्मेलन कक्ष में 23 सितम्बर को त्रिपक्षीय संरक्षा समिति की बैठक सफलतापूर्वक संपन्न हुई। गौरतलब है कि इस विशिष्ट बैठक में कुनुस्तोड़िया क्षेत्रीय प्रबंधन, खान सुरक्षा महानिदेशालय और यूनियन के प्रतिनिधि सम्मिलित रूप से मौजूद रहे। बैठक में खान सुरक्षा महानिदेशालय, सीतारामपुर से निदेशक (खनन) श्री एस. एस . सोनी, निदेशक (यांत्रिकी) श्री एन. गोविंद फुले, उप निदेशक (खनन) श्री रौनक मंडल, उप निदेशक (खनन) श्री आर. लिन्गैया, उप निदेशक (यांत्रिकी) श्री वी. रंगाराव, उप निदेशक (वैद्युतिकी) श्री प्रवीण एस., उप निदेशक (खनन) श्री बी. आर. मोगली विशिष्ट अतिथियों के रूप में उपस्थित रहे। इसके साथ ही, सेफ़्टी कमिटी सदस्यों व क्षेत्रीय प्रबंधन के प्रतिनिधियों की भी विशेष मौजूदगी रही। बैठक में उपस्थित सभी का स्वागत क्षेत्रीय महाप्रबंधक श्री अनंत घोष ने किया और कहा कि मनुष्य, मशीन तथा खान के सुरक्षार्थ इस तरह की बैठक का अपना विशेष महत्व है जिसमें त्रिस्तरीय वार्ता के माध्यम से हम कोयला खनन की दिशा में शून्य क्षति के अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होते हैं। बैठक में खान सुरक्षा की दिशा में कुनुस्तोड़िया क्षेत्र की ओर से किये गये कार्यों की समीक्षा की गयी तथा भविष्य में इस दिशा में बेहतर क्रियान्वयन के लिए सम्मिलित रूप से गहन विमर्श भी किया गया। बैठक के दौरान त्रिपक्षीय वार्ता के माध्यम से कई महत्वपूर्ण सुझाव सामने आये जिससे खान सुरक्षा में क्षेत्र की प्रतिबद्धता को और सशक्त किया जा सकता है। इसपर क्षेत्रीय महाप्रबंधक श्री घोष ने क्षेत्र की ओर से यह आश्वासन दिया कि तमाम सकारात्मक सुझावों का शत प्रतिशत अनुपालन किया जाएगा। इस अवसर पर क्षेत्रीय संरक्षा अधिकारी श्री उमेश पंडित की ओर से एक पावरपॉइंट प्रस्तुति के माध्यम से क्षेत्र में खान सुरक्षा की वर्तमान स्थिति को दर्शाया गया।

सहायक अध्यापक श्री शंभु रजक का विदाई समारोह

जामुड़िया। जामुड़िया हिंदी उच्च विद्यालय में सहायक अध्यापक श्री शंभु रजक के विदाई समारोह एवं पुरस्कार वितरण कार्यक्रम का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विद्यालय परिवार के साथ-साथ कई गणमान्य अतिथि भी शामिल हुए। इस मौके पर बोरो चेयरमैन शेख शानदार, पवन कुमार मावण्डिया, रोहन राम रजक और सलीम अंसारी ने संयुक्त रूप से शंभु रजक को मानपत्र एवं शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया।कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों के स्वागत से हुआ। मानपत्र का वाचन सहायक प्रधानाध्यापक रोहन राम रजक ने किया। समारोह के दूसरे चरण में विद्यार्थियों को विभिन्न शैक्षणिक और सांस्कृतिक गतिविधियों में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए पुरस्कृत किया गया। पुरस्कार वितरण के समय बच्चों के चेहरे पर उत्साह और गर्व की झलक देखने को मिली। इस दौरान बोरो चेयरमैन शेख शानदार और पवन कुमार मावण्डिया ने अपने विचार व्यक्त करते हुए शंभु रजक के शिक्षण कार्य एवं विद्यालय के प्रति उनके योगदान की सराहना की। उन्होंने कहा कि शंभु रजक जैसे शिक्षक विद्यार्थियों के जीवन को सही दिशा देने में सदैव प्रेरणा स्रोत बने रहते हैं। इस कार्यक्रम के द्वारान विशेष अतिथि के रूप में पवन कुमार अग्रवाल, अरिजीत मंडल (सर्किल 1), दीप नारायण नायक (एच.एच.), मोहम्मद सलीम अंसारी, संतोष केशरी, बंशीधर मिश्रा सहित अन्य शिक्षक-शिक्षिकाएँ एवं स्थानीय लोग उपस्थित रहे।

पीने के पानी के लिए हाहाकार सड़क पर बैठी महिलाएं

जामुड़िया। जामुड़िया विधानसभा अंतर्गत रानीसायर में पीने के पानी के लिए हाहाकार, महिलाएं सड़क पर बैठ यात्री सेवाएँ कराई ठप हालाँकि इलाके में टंकियों के जरिए पानी की आपूर्ति होती है, लेकिन वह पर्याप्त नहीं है।रानीगंज के रानीसायर इलाके में यह समस्या कई हफ़्तों से लगातार बनी हुई है। इसलिए इस बार कोई और रास्ता न मिलने पर, रानीसायर इलाके के लोगों ने बुधवार को रानीगंज के रानीसायर से जामुड़िया जाने वाली लोक निर्माण विभाग की सड़क को जाम कर विरोध प्रदर्शन किया।विरोध प्रदर्शन के कारण उस सड़क पर यातायात ठप हो गया।घटना की खबर मिलते ही रानीगंज थाने की पंजाबी मोड़ फाड़ी की पुलिस मौके पर पहुँची और स्थिति को नियंत्रण में किया।प्रदर्शनकारियों के अनुसार,एक हफ़्ते से नल से पानी नहीं आ रहा है और टंकियों से भी पर्याप्त पानी की आपूर्ति नहीं हो रही है।नतीजतन, सभी लोग कुएँ का पानी पीने को मजबूर हैं।इससे कई तरह की बीमारियाँ फैल रही हैं खासकर हैजा और दस्त तथा छोटे बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक सभी तरह-तरह की बीमारियों से ग्रस्त हैं।इसलिए हमें मजबूरन सड़क जाम करनी पड़ी। हमारी एकमात्र मांग यह है कि क्षेत्र में नियमित रूप से पेयजल की आपूर्ति की जाए।

दुर्गापूजा के अवसर पर वस्त्र वितरण

जामुड़िया। सिर्फ.मूर्तियों में ही नहीं, हर माँ में माँ दुर्गा का वास है। इसी संदेश को ध्यान में रखते हुए, श्यामला ग्राम पंचायत के वर्तमान प्रधान असित मंडल, जामुड़िया विधानसभा के श्यामला ग्राम पंचायत क्षेत्र के संकटग्रस्त परिवारों की माताओं के चेहरों पर मुस्कान लाने के लिए आगामी दुर्गा पूजा के अवसर पर नए वस्त्र वितरण कार्यक्रम का आयोजन कर रहे हैं।उन्होंने महालया के दिन इस बसन पारो माँ कार्यक्रम की शुरूआत की। तब से लेकर अब तक श्यामला ग्राम पंचायत क्षेत्र के हर गाँव में गरीब और संकटग्रस्त माताओं को लगातार नए वस्त्र वितरित किए जा रहे हैं।श्यामला ग्राम पंचायत प्रधान असित मंडल ने कहा, हम मूर्तियों की पूजा करते हैं, लेकिन देवी हर माँ में निवास करती हैं। इसलिए हम हर साल दुर्गा रूपी माताओं को नए वस्त्र वितरित करते आ रहे हैं।बुधवार को श्यामला ग्राम पंचायत के फरफारी और भूडी ग्राम की माताओं को चटाई सौंपने का कार्यक्रम श्यामला क्षेत्र तृणमूल छात्र परिषद कार्यालय में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित पंचायत प्रधान असित मंडल माताओं को चटाई सौंप रहे थे और माताओं को दुर्गा रूपी भेंट कर रहे थे, और माताएँ भी पंचायत प्रधान को आशीर्वाद दे रही थीं।

बकाया राशि को लेकर ठेकेदारों ने आसनसोल पीएचई कार्यालय में किया प्रदर्शन

आसनसोल। बंगाल के सबसे बड़े त्योहार दुर्गा पूजा में अब कुछ ही दिन शेष हैं, ऐसे में ठेकेदारों ने सोमवार को आसनसोल स्थित लोक स्वास्थ्य अभियांत्रिकी (पीएचई) कार्यालय में धरना दिया और अपने लंबे समय से लंबित बकाया भुगतान की मांग की।ठेकेदारों ने आरोप लगाया कि जल जीवन मिशन के तहत भुगतान लंबे समय से लंबित है। उन्होंने यह भी दावा किया कि 2022 से अब तक हुए कई चुनावों का बकाया भी जारी नहीं किया गया है। इसके अलावा, शहर में भीषण जल संकट के दौरान टैंकरों के माध्यम से पेयजल की आपूर्ति की गई, लेकिन उस सेवा का भुगतान भी अभी तक नहीं हुआ है।प्रदर्शनकारी ठेकेदारों ने चेतावनी दी कि ऐसी परिस्थितियों में उनके लिए आगे कोई काम करना संभव नहीं होगा। उन्होंने यह भी कहा कि बकाया भुगतान न होने के कारण, वे परियोजनाओं में लगे मजदूरों का वेतन भी नहीं दे पा रहे हैं।त्यौहारों का मौसम नजदीक आने के साथ ही इस प्रदर्शन ने राज्य सरकार पर इस मुद्दे को जल्द से जल्द सुलझाने का अतिरिक्त दबाव डाल दिया है।

Page-6_ARO KHABAE PAGE-1.qxd 9/25/2025 6:31 PM Page 1

बांग्लादेश को 41 रनों से रौंदकर भारत ने बनाई फाइनल में जगह

निज संवाददाता : भारतीय क्रिकेट टीम एशिया कप 2025 के सुपर-4 के अपने दूसरे मैच में बीते बुधवार को बांग्लादेश को 41 रनों से रौंदकर फाइनल में पहुंच गई। दुबई अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम में खेले गए मैच में भारत ने बांग्लादेश को जीत के लिए 169 रन का लक्ष्य दिया था। जवाब में बांग्लादेश की टीम 19.3 ओवर में 127 रन पर सिमट गई। 169 रन का लक्ष्य हासिल करने उतरी बांग्लादेश की शुरुआत अच्छी नहीं रही थी और टीम का स्कोर जब 4 था, जसप्रीत बुमराह ने तंजीद हसन को आउट कर दिया। तीसरे नंबर पर आए परवेज हुसैन इमोन ने सलामी बल्लेबाज सैफ हसन के साथ दूसरे विकेट के लिए 42 रन जोड़े, लकिन अच्छे आगाज को परवेज लंबा नहीं खींच सके और कुलदीप यादव ने परवेज (21) को अभिषेक के हाथों लपकवाकर चलता किया। आतिशी पारी खेलने वाले अभिषेक शर्मा को प्लेयर ऑफ द मैच चुना गया। इसके बाद नियमित अंतराल पर विकेट गिरे। हालांकि, लगातार गिरते विकेटों के बीच सलामी बल्लेबाज सैफ हसन ने 51 गेंद पर 5 छक्के और 3 चौके की मदद से 69 रन की पारी खेली।

हालांकि, वह भी भाग्यशाली ही रहे कि उन्हें एक-दो नहीं, बल्कि पूरे चार जीवनदान भारतीय खिलाड़ियों ने दिए। लेकिन समय गुजरने के साथ ही रनों का बोझ बांग्लादेश पर भारी होता गया, तो एक छोर भी अकेल

पड़ गए। सैफ का अकेला संघर्ष बांग्लादेश की जीत के लिए पर्याप्त नहीं था। सैफ और परवेज को छोड़ तीसरा कोई भी बल्लेबाज दो अंकों में नहीं पहुंच सका। पूरी टीम 19.3 ओवर में 127 पर सिमट गई।भारत के लिए जसप्रीत बुमराह ने बेहतरीन गेंदबाजी की और 4 ओवर में सिर्फ 18 रन देकर 2 विकेट लिए, लेकिन सबसे ज्यादा विकेट कुलदीप यादव के हिस्से में आए।

उन्होंने 4 ओवर में 18 रन देकर 3, वरुण चक्रवर्ती ने 4 ओवर में 29 रन देकर 2 विकेट लिए, तो अक्षर पटेल और तिलक वर्मा को 1-1 विकेट मिला।इससे पहले टॉस गंवाकर पहले बल्लेबाजी करने उतरी भारतीय क्रिकेट टीम ने 6 विकेट के नुकसान पर 168 रन बनाए थे। भारतीय टीम को शुभमन गिल और अभिषेक शर्मा ने 6.2 ओवर में पहले विकेट के लिए 77 रन जोड़कर मजबूत शुरुआत दी थी, लेकिन मध्यक्रम के बल्लेबाज इस आतिशी शुरुआत का फायदा नहीं उठा सके। लगातार विकेट गिरने से रन गति प्रभावित हुई और कम से कम 30 रन कम बने। अभिषेक शर्मा ने 37 गेंद पर 75 रन की पारी खेली।

इस पारी में 5 छक्के और 6 चौके शामिल रहे, तो स्लॉग ओवरों में हार्दिक पांड्या ने 29 गेंद पर 38 और गिल ने 19 गेंद पर 29 रन बनाए। शिवम दुबे 2, कप्तान सूर्यकुमार यादव 5, तिलक वर्मा 5 रन बनाकर आउट हुए अक्षर पटेल 10 रन बनाकर नाबाद रहे। बांग्लादेश के लिए के लिए तंजीम हसन साकिब, मुस्तिफुजर रहमान, मोहम्मद सैफुद्दीन ने 1-1 और रिशाद हुसैन ने 2 विकेट लिए।

स्थानीय फुटबॉल प्रतिभाओं के लिए नया मंच- आठ अनोखे नाम की टीम इसमें हिस्सा लेगी

निज संवाददाता : समृद्ध फुटबॉल संस्कृति वाला शहर जमशेदपुर अब एक अभिनव खेल पहल का गवाह बनने जा रहा है। इंडियन सुपर लीग (आईएसएल) क्लब जमशेदपुर एफसी ने घोषणा की है कि वह जमशेदपुर सुपर लीग का आयोजन करने जा रहा है। इस टूर्नामेंट का मुख्य उद्देश्य है स्थानीय फुटबॉलरों को तलाशना और उन्हें निखारने का अवसर प्रदान करना।इस लीग में कुल आठ अनोखे नाम भाग ले रहे हैं : अग्नि एफसी, आकाश एफसी, ब्रह्मांड एफसी, पाताल एफसी, पृथ्वी एफसी, त्रिलोक एफसी, वायु एफसी और प्रकृति एफसी। इन सभी टीमों को प्रशिक्षित करेंगे जमशेदपुर एफसी और प्रसिद्ध टाटा फुटबॉल अकादमी से जुड़े कोच, जिससे युवा खिलाड़ियों को शुरू से ही पेशेवर प्रशिक्षण और आधुनिक फुटबॉल दर्शन से परिचय मिलेगा।इस टूर्नामेंट की सबसे बड़ी खासियत इसका अलग तरह का खिलाड़ी चयन प्रक्रिया है। पारंपरिक ट्रायल के बजाय खिलाड़ियों को नीलामी प्रणाली के माध्यम से चुना गया। इस तरीके ने न केवल

टीमों के बीच संतुलन बनाया बल्कि स्थानीय फुटबॉल हलकों में जबरदस्त उत्साह भी पैदा किया। बताया जाता है कि इस नीलामी को लेकर उभरते खिलाड़ी और दर्शक दोनों ही बेहद उत्साहित रहे, जिससे प्रतियोगिता का रोमांच और बढ़ गया।जमशेदपुर सुपर लीग की अहमियत इस वजह से भी है कि इसके उत्कृष्ट खिलाड़ी सीधे जमशेदपुर एफसी की रिज़र्व टीम और विभिन्न आयु वर्ग की युवा टीमों में जगह पाएंगे। इस तरह उन्हें भारतीय फुटबॉल के शीर्ष स्तर तक पहुंचने का मार्ग मिलेगा। फुटबॉल विशेषज्ञों का मानना है कि यह पहल न केवल जमशेदपुर बल्कि झारखंड और पूरे पूर्वी भारत के फुटबॉल ढांचे को नई दिशा देगी।जमशेदपुर एफसी के अधिकारियों ने संकेत दिया है कि इस लीग को वार्षिक आयोजन के रूप में स्थापित करने की योजना है। ऐसा होने पर यह न केवल आईएसएल के लिए एक महत्वपूर्ण फीडर प्रणाली बनेगा बल्कि हजारों युवाओं को फुटबॉल अपनाने के लिए भी प्रेरित करेगा।शहर में पहले से ही उत्साह का माहौल है। प्रशंसक बेसब्री से इंतज़ार कर रहे हैं कि कब मैदान में अग्नि, आकाश या पृथ्वी एफसी जैसी टीमें उतरेंगी। फुटबॉल प्रेमियों के लिए यह सुपर लीग केवल मनोरंजन ही नहीं, बल्कि स्थानीय खिलाड़ियों को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंच पर उभरते देखने का रोमांच भी लेकर आएगी।

डिकी बर्ड : चला गया खेल का दिग्गज सितारा

शुभ्रांशु राय

क्रिकेट जगत आज गहरे दुःख में सिर झुकाए खड़ा है। हाल ही में हैरोल्ड डेनिस ''डिकी'' बर्ड, खेल के इतिहास के सबसे पहचाने जाने वाले, प्रिय और व्यक्तित्व से भरे चेहरों में से एक, का 92 वर्ष की आयु में निधन हो गया।अम्पायरिंग से परे एक दंतकथाडिकी बर्ड केवल स्टम्प्स पर सफेद कपड़ों में खड़े एक शख़्स नहीं थे; वे निष्पक्षता, जुनून, हास्य और क्रिकेट के प्रति अटूट प्रेम का प्रतीक थे। उन्होंने अपना करियर एक प्रथम-श्रेणी क्रिकेटर के रूप में शुरू कियायॉर्कशायर और बाद में लीसेस्टरशायर के लिए खेलते हुएलेकिन उनकी पहचान सबसे अधिक अम्पायरिंग के कारण बनी, जिसने उन्हें क्रिकेट की एक जीवित दंतकथा बना दिया।चोट के कारण उनका खेल करियर छोटा रह गया, लेकिन उसी ने उन्हें एक नई राह पर धकेला। 1970 में प्रथम-श्रेणी अम्पायरिंग से शुरुआत कर बर्ड ने आगे चलकर 66 टेस्ट मैच और लगभग 69 एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय मैचों में अम्पायरिंग की, जिनमें तीन विश्व कप फाइनल भी शामिल थेयह एक ऐसा रिकॉर्ड और प्रतिष्ठा है जिसे

शोक में डुबा क्रिकेट जगत

दोहराना कठिन है।विदाई की यात्राबर्ड ने 1996 में अंतरराष्ट्रीय अम्पायरिंग से विदाई की घोषणा की और अपनी टेस्ट अम्पायरिंग का समापन ''अपने घर'' में करने का निर्णय लिया। उनका आख़िरी घरेलू टेस्ट इंग्लैंड बनाम भारत था, जो जून 1996 में लॉर्ड्स में खेला गया। वह क्षण भावनाओं से भरा था: दर्शक, खिलाड़ी और पूरा खेल उन्हें सलाम कर रहा था।उन्होंने कुछ और साल काउंटी क्रिकेट में अम्पायरिंग जारी रखी, फिर पूरी तरह से संन्यास ले लिया। लेकिन रिटायरमेंट के बाद भी वे क्रिकेट से कभी दूर नहीं हुए: मार्गदर्शन, टिप्पणियां, लेखन और हमेशा अगली गेंद पर नज़र बनाए रखनायह उनकी पहचान बनी रही।व्यक्ति, मिथक और ''बर्ड''डिकी बर्ड की लोकप्रियता केवल उनकी सटीकता या निष्पक्षता तक सीमित नहीं थी (हालांकि दोनों असाधारण थे); उनकी असली ताक़त उनकी मानवता थी। उनका हास्य, उनकी अल्हड़ता, उनका खुला दिलइन सबने उन्हें अम्पायर से कहीं अधिक बना दिया। वे एक व्यक्तित्व थे, एक किस्सागो, ऐसे इंसान जिनके लिए क्रिकेट की छवि उसकी परंपराओं और चरित्रों से अलग सोची ही नहीं जा सकती थी।उनकी आत्मकथा की दस लाख से अधिक प्रतियां बिकीं। उन्होंने युवाओं को खेल से जोड़ने के लिए परोपकारी प्रयास किए। उनके गृहनगर बार्न्सले ने उनके सम्मान में उनकी प्रतिमा स्थापित की।

ये सभी प्रमाण हैं कि वे कितनी गहराई से क्रिकेटविशेषकर इंग्लिश क्रिकेटकी बुनावट में रचे-बसे थे।एक युग का अंतबर्ड के निधन के साथ क्रिकेट ने अपने मानवीय पक्ष का एक सेतु खो दियावह दौर जब अम्पायर भी चरित्र थे, जब निष्पक्षता केवल नियमों से नहीं बल्कि दिल से महसूस की जाती थी, जब खेल की परंपराएं फुटनोट नहीं बल्कि जीते-जागते मूल्य हुआ करती थीं।खेल कई बार बदला। तकनीक, वाणिज्यीकरण, वैश्विक विस्तारइनमें से कोई भी बर्ड के लिए नया नहीं था। पर वे हमेशा चिंतित रहते थे कि इन परिवर्तनों ने खेल को किस दिशा में पहुंचा दिया। उन्होंने एक बार कहा था कि ''पैसा इस खेल की बर्बादी का कारण बना'' और यह भी जताया कि इलेक्ट्रॉनिक उपकरण अम्पायर के फैसलों की अहमियत को कम कर रहे हैं।फिर भी, इन सब बदलावों के बीच बर्ड एक स्थिर धुरी बने रहे। बहुतों के लिए उनकी हंसी, उनका अंदाज़, उनकी निगाहये छोटी-छोटी बातें क्रिकेट की यादों का एक पूरा साम्राज्य थामे रहीं।एक विरासत जो अमर रहेगीडिकी बर्ड भले ही पिच से चले गए हों, लेकिन क्रिकेट प्रेमियों के दिलों से वे कभी नहीं जाएंगे। खिलाड़ियों ने उनका सम्मान किया; प्रशंसकों ने उन्हें प्यार किया। उनकी विरासत वह मानक है जो उन्होंने स्थापित कियागरिमा, निष्पक्षता और दयालुता का। उनकी संस्था आगे भी जीवन छूती रहेगी। उनकी कहानियां, उनकी प्रतिमा, उनकी किताबेंउन मूल्यों को आगे ले जाएंगी जिनके लिए वे खड़े थे।दुनिया भर से श्रद्धांजलियां उमड़ रही हैंयॉर्कशायर से लेकर भारत तक, और उन तमाम मैदानों से जहां उन्होंने कदम रखा। एक बात साफ़ है: भले ही वे हटे, वे कभी गए नहीं। उनका साम्राज्य ट्रॉफियों या खिताबों से नहीं बना था, बल्कि भरोसे, हंसी और करुणा से बना थाऔर वही हमेशा जीवित रहेगा।

मां मनोकामना दुर्गा मंदिर में स्थापित हुई वैष्णवी नव दुर्गा प्रतिमा

निज संवाददाता : मां मनोकामना दुर्गा मंदिर, घुसूडी की स्थापना 1998 में हुई थी। तब मंदिर में मां दुर्गा की तस्वीर रखकर भक्त पूजा-अर्चना करते थे। देखते-देखते मंदिर श्रद्धालुओं की आस्था का केंद्र बनता गया। इसके बाद वर्ष 2024 में मंदिर का जीर्णोद्धार कर भव्य स्वरूप प्रदान किया गया। पुजारी पं. रंजीत पांडे बताते हैं कि इस मंदिर में माता के वैष्णवी नव दुर्गा मूर्ति की स्थापना 2024 में की गई। मंदिर को इतना भव्य रूप दिया गया कि यहां मंदिर प्रांगण में आपकी उपस्थिति से ही आपके मन मस्तिष्क में एक पॉजिटिव एनर्जी प्राप्त होगा आपको मानसिक रूप से शारीरिक रूप से और बौद्धिक रूप से संतुष्टि प्राप्त होगी। नवरात्र में मंदिर के बाहर पूजा समिति की ओर से भव्य व विशाल भंडारा का आयोजन किया जाता है।नवरात्र के दौरान मंदिर में षष्ठी को बेल न्योतन के लिए धूमधाम से गाजे-बाजे के साथ शोभा यात्रा निकाली जाती है। सप्तमी को माता को हलुआ का भोग, अष्टमी को खीर व 56 भोग और नवमी को पंचमेवा व शक्कर का भोग लगाया जाता है। इस मंदिर की मान्यता है कि यहां जो भी भक्त सच्चे हृदय से माता के समक्ष झोली फैलाते हैं, उनकी मनोकामनाएं जल्द पूरी होती हैं। यह मंदिर घुसूडी दयाराम नसकर लेन तालतला शक्ति मंदिर क्लब के पास स्थित है। यहां प्रतिवर्ष हजारों की संख्या में

भक्त आते हैं। इस मंदिर की खासबात यह है कि यहां पर लोगों को नव रूप के साथ बाबा भोलेनाथ शिव के भी दर्शन का पुण्य की प्राप्ति होती है। महाशिवरात्रि के अवसर पर मंदिर प्रांगण में बाबा महादेव भव्य पूजा अर्चना व शिव अभिषेक किया जाता है। इस मंदिर में एक साथ मां दुर्गा के साथ ही शिव भोलेनाथ की पूजा अर्चना की जाती है। इस मंदिर का संचालन नवदुर्गा मंदिर सेवा संस्थान द्वारा किया जाता है सेवा संस्थान के संयोजक और मंदिर को संचालित मधु जी और विनोद जी देखते हैं मधु जी ने बताया कि मंदिर का लुक उत्तर भारतीय और दक्षिण भारतीय वास्तुकला से बनाया गया है जो कि लोगों को अपनी ओर एक पॉजिटिव एनर्जी देती है और यहां पर सुख और शांति का अनुभव होता है माता का नौ रूप अपने आप में अद्भुत है वहीं एक ताले पर भगवान शिव और मां पार्वती का मंदिर है वही आने वाले दिनों में राम दरबार भी मंदिर प्रांगण में आपको देखने को मिलेगा मंदिर का संचालन कई धर्मावली समाज से भी लोग के द्वारा होता है।

फुटसाल में भारतीय टीम की पहली यादगार जीत

निज संवाददाता : कुवैत में भारतीय फुटसाल टीम ने इतिहास रच दिया। बुधवार को एशियन कप क्वालिफ़ायर में मंगोलिया को 3-0 से हराकर भारत ने अंतरराष्ट्रीय फुटसाल में अपनी पहली जीत दर्ज की। यह सिर्फ पहली जीत ही नहीं, बल्कि भारतीय फुटसाल इतिहास में पहला ऐसा मैच रहा जहां टीम ने क्लीन शीट रखा। अरदिया के कुशैयान अल-मुतैरी हॉल में गिने-चुने भारतीय समर्थक मौजूद थे, जो इस ऐतिहासिक पल के गवाह बने।1930 के दशक में दक्षिण अमेरिका में इस खेल का आविष्कार हुआ था, लेकिन 1989 में फीफा ने फुटसाल को आधिकारिक मान्यता दी। उसी वर्ष फीफा की मान्यता प्राप्त पहला अंतरराष्ट्रीय फुटसाल टूर्नामेंट आयोजित हुआ, जिसका आधिकारिक नाम था फीफा फुटसाल वर्ल्ड चैंपियनशिप। यह टूर्नामेंट 515 जून 1989 तक क़तर की राजधानी दोहा में खेला गया। 16 देशों ने इसमें भाग लिया था। फ़ाइनल में ब्राज़ील ने स्पेन को हराकर खिताब जीता।विश्व रैंकिंग में भारत से 25 स्थान आगे यानी 110वें स्थान पर है मंगोलिया। ऐसे प्रतिद्वंद्वी के खिलाफ भारत ने जोश और आत्मविश्वास के साथ खेल दिखाया। 17वें मिनट में सियोन डि'सूज़ा के गोल से भारत ने बढ़त बनाई। पहले हाफ़ में और कोई गोल नहीं हुआ।दूसरे हाफ़ में मंगोलिया ने बराबरी करने की कोशिश की, लेकिन रेज़ा कोर्दी की टीम ने आक्रामक रवैया जारी रखा।

33वें मिनट में काउंटर अटैक पर डि'सूज़ा ने एक और गोल दागा। इसके दो मिनट बाद अनमोल अधिकारी ने निर्णायक गोल कर दिया। इस तरह 14 वर्षों से अधिक अंतरराष्ट्रीय फुटसाल अनुभव रखने वाली मंगोलियाई टीम को हराकर भारत ने अपनी पहली अंतरराष्ट्रीय जीत दर्ज की। भारतीय टीम ने 2023 में अंतरराष्ट्रीय फुटसाल में हिस्सा लेना शुरू किया था। महज़ दो साल में मिली यह सफलता विशेषज्ञों से सराहना पा रही है।इससे पहले क्वालिफ़ायर के मैचों में भारत मेज़बान कुवैत से 1-4 और ऑस्ट्रेलिया से 1-10 से हार गया था। उन हारों से सबक लेते हुए टीम ने मंगोलिया के खिलाफ यादगार जीत हासिल की।

एशियाड के फुटबॉल इवेंट में भारत की भागीदारी पर बड़ा सवाल?

- आवश्यक शर्तें पूरी न कर पाने के कारण पुरुष व महिला टीम नहीं ले पाएंगी हिस्सा

निज संवाददाता : अगले वर्ष जापान के आइची प्रीफेक्चर और नागोया में एशिया का सबसे बड़ा खेल महोत्सव, एशियाई खेलों का आयोजन हो रहा है। प्रतियोगिता 19 सितंबर 2026 से होकर 4 अक्टूबर तक चलेगी। लेकिन इस महायज्ञ में भारत की पुरुष और महिला फुटबॉल टीम हिस्सा नहीं ले पाएगी। केंद्रीय खेल मंत्रालय की नए दिशानिर्देशों के अनुसार, दोनों टीमें आवश्यक शर्तें पूरी करने में असफल रही हैं। नतीजतन, एशियाड के फुटबॉल इवेंट में भारत की भागीदारी पर बड़ा प्रश्नचिह्न खड़ा हो गया है।खेल मंत्रालय की नई नीति की धारा 4.1.3 में उल्लेख किया गया है कि टीम इवेंट्स (जैसे फुटबॉल, हॉकी, बास्केटबॉल) में एशिया की शीर्ष आठ रैंकिंग में आना अनिवार्य होगा। लेकिन मौजूदा रैंकिंग के अनुसार भारतीय पुरुष टीम एशिया में 24वें स्थान पर है, जबकि महिला टीम 12वें स्थान पर है। इस तरह रैंकिंग के आधार पर दोनों टीमें शर्त पूरी नहीं कर पाई हैं।यह फैसला भारतीय फुटबॉल के लिए एक बड़ा झटका है। भारतीय पुरुष फुटबॉल टीम का एशियाई खेलों में गौरवशाली इतिहास रहा है 1951 और 1962 में स्वर्ण पदक तथा 1970 में कांस्य पदक। खासकर 1970 का कांस्य जीत ऐतिहासिक उपलब्धि थी। लेकिन हाल के दशकों में टीम का प्रदर्शन अपेक्षित स्तर का नहीं रहा, जिसके चलते मंत्रालय को कठोर नीति अपनानी पड़ी।महिला टीम की

स्थिति थोड़ी अलग है। उन्हें हाल ही में एशियन कप में खेलने का अवसर मिला। यदि वे उस प्रतियोगिता में शीर्ष आठ टीमों में जगह बना लेती हैं, तो एशियाड में खेलने की पात्रता हासिल कर सकती हैं। लेकिन पुरुष टीम के लिए ऐसा कोई विकल्प उपलब्ध नहीं है।खेल मंत्रालय की यह नीति केवल फुटबॉल ही नहीं, बल्कि हॉकी, बास्केटबॉल, टेनिस, टेबल टेनिस जैसे अन्य टीम खेलों पर भी लागू होगी। इस नीति का उद्देश्य सीमित संसाधनों का सर्वोत्तम उपयोग करना और केवल उन्हीं खिलाड़ियों/टीमों को भेजना है जिनमें अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पदक जीतने की क्षमता है।हालांकि, इस निर्णय की आलोचना भी हो रही है। कई विशेषज्ञों का मानना है कि बड़ी प्रतियोगिताओं में भाग न लेने से युवा और उभरते खिलाड़ियों को अनुभव हासिल करने का अवसर नहीं मिलता, जिससे खेल के दीर्घकालिक विकास में बाधा उत्पन्न होती है। 2018 और 2023 में भी मंत्रालय पहले फुटबॉल टीम को भेजने के पक्ष में नहीं था, लेकिन बाद में फेडरेशन के हस्तक्षेप से टीमों को अनुमति मिली थी। अब देखना यह होगा कि इस बार ऑल इंडिया फुटबॉल फेडरेशन (एआईएफएफ) कोई पहल करता है या नहीं।भारतीय फुटबॉल के भविष्य को संवारने के लिए बड़े टूर्नामेंटों में भागीदारी बेहद ज़रूरी है। इसलिए सरकार और फेडरेशन के संयुक्त प्रयास से टीम के स्तर को बेहतर बनाने के लिए ठोस कदम उठाना आवश्यक है। अन्यथा, भारतीय फुटबॉल टीम को एशियाई खेलों जैसे महत्वपूर्ण मंच से अनुपस्थित रहना पड़ेगा।

स्वामी मोहता पब्लिशिंग हाउस के लिए, प्रकाशक, मुद्रक : अजय कुमार मोहता द्वारा अरिहंत मुद्रा, 61, सूर्यसेन स्ट्रीट, कोलकाता-700009 से मुद्रित एवं प्रकाशित। **संपादकीय कार्यालय** : 10, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद सरणी, (क्लाइब रो), 5बी मंजिल, रूम नं. 9, कोलकाता-700001, **स्थानीय कार्यालय** : 28-5 कन्वेंट रोड, मौलाली, कोलकाता-700014। **संपादक : अजय कुमार मोहता**, मो. 9830045693, E-mail-gambheersamachar@gmail.com. Website. www.gambheersamachar.in (प्रकाशित रचनाओं के चयन, संपादन हेतु पीआरबी एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी, सभी कानूनी विवाद के लिए कोलकाता न्याय क्षेत्र)

Page-7_ARO KHABAE PAGE-1.qxd 9/25/2025 6:35 PM Page 1

महान राजा और समाज सुधारक थे महाराजा अग्रसेन

रमेश सर्राफ धमोरा

महान राजा और समाज सुधारक महाराजा अग्रसेन की जयंती के उपलक्ष्य में प्रति वर्ष अग्रसेन जयंती मनाई जाती है। जिन्होंने अग्रवाल समुदाय की स्थापना की और समाज के लिए समानता, सामाजिक कल्याण, और भाईचारे के सिद्धांतों को बढ़ावा दिया। इस दिन को उनके विचारों और आदर्शों के प्रति समर्पण दर्शाने और सामुदायिक सेवा गतिविधियों के माध्यम से उनके संदेश को फैलाने के लिए मनाया जाता है। महाराजा अग्रसेन का जन्म अश्विन शुक्ल प्रतिपदा को महाराजा वल्लभ सेन के घर हुआ था। जिसे दुनिया भर में अग्रसेन जयंती के रूप में मनाया जाता है। राजा वल्लभ के अग्रसेन और शूरसेन नामक दो पुत्र हुये थे। अग्रसेन महाराज वल्लभ के ज्येष्ठ पुत्र थे। महाराजा अग्रसेन के जन्म के समय गर्ग ऋषि ने महाराज वल्लभ से कहा था कि यह बालक बहुत बड़ा राजा बनेगा। इस के राज्य में एक नई शासन व्यवस्था उदय होगी और हजारों वर्ष बाद भी इनका नाम अमर होगा। उनके राज में कोई दुखी या लाचार नहीं था। बचपन से ही वे अपनी प्रजा में बहुत लोकप्रिय थे।महाराजा अग्रसेन ने शासन प्रणाली में एक नयी व्यवस्था को जन्म दिया था। उन्होंने वैदिक सनातन आर्य सस्कृंति की मूल मान्यताओं को लागू कर राज्य में कृषि-व्यापार, उद्योग, गौपालन के विकास के साथ-साथ नैतिक मूल्यों की स्थापना की थी। महाराजा अग्रसेन एक कर्मयोगी थे जिन्होंने सभी के लिए समृद्धि की कामना की। उन्होंने अहिंसा का आदर्श अपनाया जिसमें उन्हें पशु बलि की निरर्थकता का अहसास हुआ। इस अहसास ने उन्हें अहिंसा के सशक्त नायकों में से एक बना दिया। उन्होंने सभी जानवरों की बलि पर प्रतिबंध लगा दिया। हालांकि अहिंसा में उनके विश्वास का मतलब उत्पीड़न का विरोध न करना नहीं था बल्कि उन्होंने आत्मरक्षा को बढ़ावा दिया। उनके अनुसार आत्मरक्षा और राष्ट्ररक्षा केवल क्षत्रियों - योद्धा जाति का कार्य नहीं है बल्कि प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है कि वह अपनी मातृभूमि की रक्षा करे।महाराजा अग्रसेन भगवान राम के वंशज और भगवान श्रीकृष्ण के समकालीन थे। वे राजा राम के पुत्र कुश की 34वीं पीढ़ी की संतान थे। महाराजा अग्रसेन को अहिंसा के प्रतीक, शांति के दूत के रूप में जाना जाता है। महाराजा अग्रसेन त्याग, करुणा, अहिंसा, शांति, समृद्धि के अवतार और एक सच्चे समाजवादी थे। महाराजा अग्रसेन को समाजवाद का अग्रदूत कहा जाता है। अपने क्षेत्र में सच्चे समाजवाद की स्थापना हेतु उन्होंने नियम बनाया था कि उनके नगर में बाहर से आकर बसने वाले प्रत्येक परिवार की सहायता के लिए नगर का प्रत्येक परिवार उसे एक सिक्का व एक ईंट देगा। जिससे आने वाला परिवार स्वयं के लिए मकान व

व्यापार का प्रबंध कर सके। इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति की छोटी-छोटी मदद से समान समाज में बराबरी का दर्जा प्राप्त किया जा सकता है।महाराजा अग्रसेन एक सूर्यवंशी क्षत्रिय राजा थे। जिन्होंने प्रजा की भलाई के लिए वणिक धर्म अपना लिया था।

महाराज अग्रसेन ने नाग लोक के राजा कुमुद के यहां आयोजित स्वंयवर में राजकुमारी माधवी का वरण किया। इस विवाह से नाग एवं आर्य कुल का नया गठबंधन हुआ। माता लक्ष्मी की कृपा से श्री अग्रसेन के 18 पुत्र हुये। राजकुमार विभु उनमें सबसे बड़े थे। महर्षि गर्ग ने महाराजा अग्रसेन को 18 पुत्र के साथ 18 यज्ञ करने का संकल्प करवाया।माना जाता है कि यज्ञों में बैठे 18 गुरुओं के नाम पर ही अग्रवंश की स्थापना हुई। ऋषियों द्वारा प्रदत्त अठारह गोत्रों को महाराजा अग्रसेन के 18 पुत्रों के साथ उनके द्वारा बसायी 18 बस्तियों के निवासियों ने भी धारण कर लिया। एक बस्ती के साथ प्रेम भाव बनाये रखने के लिए एक सर्वसम्मत निर्णय हुआ कि अपने पुत्र और पुत्री का विवाह अपनी बस्ती में नहीं दूसरी बस्ती में करेंगे। आगे चलकर यह व्यवस्था गोत्रों में बदल गई जो आज भी अग्रवाल समाज में प्रचलित है।महाराजा वल्लभ के निधन के बाद अपने नये राज्य की स्थापना के लिए महाराज अग्रसेन ने अपनी रानी माधवी के साथ सारे भारतवर्ष का भ्रमण किया। इसी दौरान उन्हें एक जगह शेर तथा भेडिये के बच्चे एक साथ खेलते मिले। उन्हें लगा कि यह दैवीय सदेश है जो इस वीरभूमि पर उन्हें राज्य स्थापित करने का संकेत दे रहा है। ऋषि मुनियों और ज्योतिषियों की सलाह पर नये राज्य का नाम अग्रेयगण रखा गया जिसे अग्रोहा नाम से जाना जाता है। वह जगह आज के हरियाणा के हिसार के पास हैं। आज भी यह स्थान अग्रहरि और अग्रवाल समाज के लिए तीर्थ के समान है। यहां महाराज अग्रसेन और मां लक्ष्मी देवी का भव्य मंदिर है।उन्होंने परिश्रम और उद्योग से धनोपार्जन के साथ-साथ उसका समान वितरण और आय से कम खर्च करने पर बल दिया। जहां एक ओर वैश्य जाति को व्यवसाय का प्रतीक तराजू प्रदान किया वहीं दूसरी ओर आत्म-रक्षा के लिए शस्त्रों के उपयोग की शिक्षा पर भी बल दिया। उस समय यज्ञ करना समृद्धि, वैभव और खुशहाली की निशानी माना जाता था। महाराज अग्रसेन ने बहुत सारे यज्ञ किए। महाराज अग्रसेन ने 108 वर्षों तक राज किया। महाराज अग्रसेन ने एक ओर हिन्दू धर्म ग्रंथों में वैश्य वर्ण के लिए निर्देशित कर्म क्षेत्र को स्वीकार किया और नए आदर्श स्थापित किए। उनके जीवन के मूल रूप से तीन आदर्श हैं- लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था, आर्थिक समरूपता एवं सामाजिक समानता।महाराजा अग्रसेन पर अनगिनत पुस्तके लिखी जा चुकी हैं। सुप्रसिद्ध लेखक भारतेंदु हरिश्चंद्र जो खुद भी अग्रवाल समुदाय से थे। उन्होने 1871 में अग्रवालों की उत्पत्ति नामक एक प्रामाणिक ग्रंथ लिखा है।

इतिहास में महाराज अग्रसेन परम प्रतापी, धार्मिक, सहिष्णु, समाजवाद के प्रेरक महापुरुष के रूप में उल्लेखित हैं। देश में जगह-जगह महाराजा अग्रसेन के नाम पर बनायी गयी स्कूल, अस्पताल, बावड़ी, धर्मशालाएं आदि महाराजा अग्रसेन के जीवन मूल्यों का आधार हैं जो मानव आस्था के प्रतीक हैं।पांच हजार वर्ष पहले महाराज अग्रसेन द्वारा प्रतिपादित समानता, समाजवाद और अहिंसा के विचार भारत के वर्तमान संविधान की भावना हैं।

जिसमें विस्तार से इनके बारे में बताया गया है। 24 सितंबर 1976 में भारत सरकार द्वारा 25 पैसे का डाक टिक्ट महाराजा अग्रसेन के नाम पर जारी किया गया था। सन 1995 में भारत सरकार ने दक्षिण कोरिया से 350 करोड़ रूपये में एक विशेष तेल वाहक पोत (जहाज) खरीदा जिसका नाम महाराजा अग्रसेन रखा गया। राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 10 का आधिकारिक नाम महाराजा अग्रसेन पर है।आज का अग्रोहा ही प्राचीन ग्रन्थों में वर्णित अग्रवालों का उद्गम स्थान अग्रेय है। अग्रोहा हिसार से 20 किलोमीटर दूर महाराजा अग्रसेन राष्ट्र मार्ग संख्या 10 के किनारे एक साधारण गांव के रूप में स्थित है। जहां पांच सौ परिवारों की आबादी रहती है। इसके समीप ही प्राचीन राजधानी अग्रेह (अग्रोहा) के अवशेष के रूप में 650 एकड भूमि में फैला महाराजा अग्रसेन धाम हैं। जो महाराज अग्रसेन के अग्रोहा नगर के गौरव पूर्ण इतिहास को दर्शाता हैं। आज भी यह स्थान अग्रवाल समाज में पांचवे धाम के रूप में पूजा जाता है। अग्रोहा विकास ट्रस्ट ने यहां पर बहुत सुंदर मन्दिर, धर्मशालाएं आदि बनाकर यहां आने वाले अग्रवाल समाज के लोगो के लिए बहुत सुविधायें उपलब्ध करवायी है। इतिहास में महाराज अग्रसेन परम प्रतापी, धार्मिक, सहिष्णु, समाजवाद के प्रेरक महापुरुष के रूप में उल्लेखित हैं।

देश में जगह-जगह महाराजा अग्रसेन के नाम पर बनायी गयी स्कूल, अस्पताल, बावड़ी, धर्मशालाएं आदि महाराजा अग्रसेन के जीवन मूल्यों का आधार हैं जो मानव आस्था के प्रतीक हैंपांच हजार वर्ष पहले महाराज अग्रसेन द्वारा प्रतिपादित समानता, समाजवाद और अहिंसा के विचार भारत के वर्तमान संविधान की भावना हैं। लेकिन हम भारतीय इन आदर्शों को अपने जीवन में नहीं उतार पाए हैं। वे हमारे संविधान में केवल शब्द बनकर रह गए हैं। अब यह हम पर निर्भर है कि हम अपने पूर्वज को श्रद्धांजलि के रूप में इन आदर्शों को अपने जीवन में अपनाएं। महाराजा अग्रसेन जी ने हमें व्यापार और आर्थिक विकास के सिद्धांत दिए थे। वहीं वैदिक धर्म, संस्कृति और आदर्शों का पालन करते हुए समाज के सभी वर्ग के लोगों की उन्नति के लिए समान अवसरों के निर्माण पर भी उन्होंने जोर दिया था।

भारी बारिश से तबाह कॉलेज स्ट्रीट का बोई पाड़ा

करोड़ों का हुआ नुकसान

निज संवाददाता : बीते मंगलवार रातभर हुई मूसलधार बारिश से कोलकाता के हृदयस्थल कॉलेज स्ट्रीट पानी में डूब गया। मशहूर बोई पाड़ा में किताब विक्रेताओं से लेकर प्रकाशकों तक हाहाकार मच गया। व्यापारियों का कहना है कि करोड़ों रुपये की किताबें पानी में डूबकर पूरी तरह नष्ट हो गईं। कई लोगों का मानना है कि इस बार की स्थिति 2020 के चक्रवात 'अम्फान' से भी अधिक भयावह है।मौसम विभाग के अनुसार, सोमवार देर रात से मंगलवार सुबह तक महज पांच-छह घंटों में करीब 300 मिमी बारिश हुई। अचानक हुई बारिश से शहर के अधिकांश इलाके जलमग्न हो गए। कोलकाता के मेयर फिरहाद हाकिम ने बताया कि जमा पानी उतरने में समय लगेगा। इस दौरान करंट लगने से कई मौतों की खबर भी सामने आई।शहर के बुजुर्गों का कहना है कि इस तरह की बारिश का कहर कई दशकों में नहीं देखा गया। मई 2020 में आए अम्फान के बाद कॉलेज स्ट्रीट में जो तबाही हुई थी, इस बार की तस्वीर और भी डरावनी है। लगभग हर दुकान में पानी

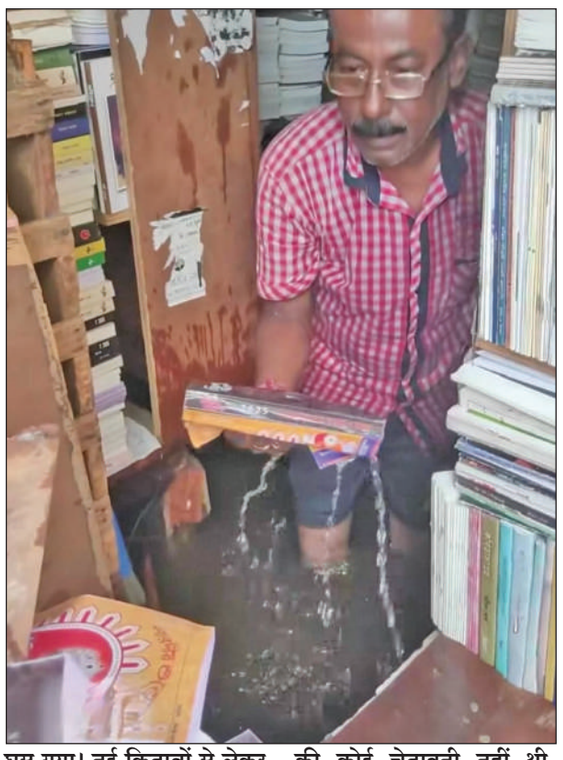

घुस गया। नई किताबों से लेकर पुरानी किताबें, पूजा विशेषांक से लेकर कागज़ का भंडारसब बर्बाद हो गया।पत्रभारती के प्रमुख और पब्लिशर्स एंड बुक सेलर्स गिल्ड के सचिव त्रिदिव चट्टोपाध्याय ने कहा-हमारी लगभग 10-12 लाख रुपये की किताबें बर्बाद हो गईं। मौसम की कोई चेतावनी नहीं थी, इसलिए किताबें ज़मीन पर ही रखी थीं। सब भीग गया।गिल्ड के अध्यक्ष सुधांशु शेखर दे ने कहा-स्थिति अम्फान से भी बदतर है। नुकसान लाखों में नहीं, करोड़ों में हुआ है।देज़ पब्लिशर्स के शुभंकर दे ने बताया कि उनकी लगभग 2 लाख रुपये की किताबें पानी में डूब गईं। महुआ पब्लिशर्स के शेखर हाजरा ने कहा-अम्फान के समय जो जगहें डूबी नहीं थीं, वे भी इस बार जलमग्न हो गईं। लगभग सात-आठ लाख रुपये की किताबें बर्बाद हो गईं।पलक पब्लिशर्स के सम्राट चक्रवर्ती ने बताया कि नई किताबें छापने के समय कागज़ समेत भारी नुकसान हुआ है। आनंद प्रकाशनी के निगमानंद मंडल ने अफसोस जताया-पूजा से पहले लगभग 20 हजार रुपये की किताबें बर्बाद हो गईं, पूजा विशेषांक भी नहीं बच पाए।जिनके स्टॉल या गोदाम दूसरी मंज़िल पर थे, वे कुछ हद तक नुकसान से बच गए। लेकिन अधिकांश व्यापारियों की स्थिति बेहद खराब है। किताब पाड़ा के विक्रेताओं और प्रकाशकों का कहना है कि इस नुकसान के असर से उबरने में उन्हें लंबा समय लगेगा।कोलकाता की संस्कृति का अभिन्न हिस्सा कॉलेज स्ट्रीट का बोई पाड़ा आज भयावह आपदा से जूझ रहा है। पूजा से ठीक पहले हुए इस भारी नुकसान ने बंगाल के प्रकाशन और किताब व्यवसाय की दुनिया पर गहरी अनिश्चितता की छाया डाल दी है।

बनाए जाएंगे 3 संयुक्त सैन्य स्टेशन

फोर्ट विलियम में सेना कमांडरों के सम्मेलन में हुआ बड़ा फैसला

निज संवाददाता : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हाल ही में कोलकाता के फोर्ट विलियम में सेना कमांडरों के सम्मेलन का उद्घाटन किया था। उस सम्मेलन में एक बड़ा फैसला लिया गया। कमांडरों का सम्मेलन बीते 17 सितंबर को भारतीय सेना के पूर्वी मुख्यालय में समाप्त हुआ। वहां यह निर्णय लिया गया कि देश के उत्तरी, मध्य और पूर्वी हिस्सों में तीन संयुक्त सैन्य स्टेशन बनाए जाएंगे। इसके अलावा, सम्मेलन में थिएटर कमांड के निर्माण पर विशेष ज़ोर देने का निर्णय लिया गया। इन संयुक्त सैन्य स्टेशनों को वर्तमान में इस थिएटर कमांड के निर्माण की दिशा में पहला कदम माना जा रहा है।इससे पहले, हाल ही में ऑपरेशन सिंदूर में भारतीय सेना और भारतीय वायु सेना के बीच समन्वय देखने को मिला था। आतंकवादी ठिकानों को नष्ट करने से लेकर दुश्मन के हमलों को नाकाम करने तक, थलसेना और वायु सेना ने मिलकर

काम किया। इसके अलावा, वायु सेना ने नौसेना के साथ भी समन्वय बनाए रखा। गौरतलब है कि मोदी सरकार कई वर्षों से अमेरिका जैसी संयुक्त सैन्य थिएटर कमांड बनाने की कोशिश कर रही है। इसी माहौल में, केंद्र सरकार ने चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ का पद सृजित किया। हालांकि, इस थिएटर कमांड को चरणबद्ध तरीके से लागू करने में काफी समय लगता है। पाकिस्तान के साथ हालिया संघर्ष में सैन्य बलों के बीच समन्वय का मुद्दा किताबों में देखने को मिला है। गौरतलब है कि अमेरिका और चीन में सैन्य बलों के थिएटर इसी तरह से संरचित हैं। भारत में इस व्यवस्था को शुरू करने को लेकर पूर्व चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ जनरल बिपिन रावत ने दावा किया कि किसी भी सुधार में कुछ बाधाएं आती हैं, लेकिन थिएटर के गठन पर सभी बल सहमत हैं। इससे पहले, रिपोर्ट में दावा किया गया था कि प्रस्तावित थिएटर कमांड में से दो विशेष रूप से चीन और पाकिस्तान पर केंद्रित होंगे। इस कमांड के गठन का उद्देश्य सेना के काम को अधिक सटीक और सुसंगत बनाना है। सरकार चाहती है कि थलसेना, वायुसेना और नौसेना के बीच समझ सुचारू रहे।

हल करो हीरो बनो का उत्तर

1.20 मई , 2.पीटर एल्बर्स, 3.एसएस मुंद्रा, 4.महाराष्ट्र, 5.हैदराबाद, 6. चैत्र

मूर्तियों के विसर्जन के लिए बीएसएफ और बॉर्डर गार्ड बांग्लादेश के बीच हुई फ्लैग मीटिंग

निज संवाददाता : दुर्गा मूर्तियों के विसर्जन को लेकर बीएसएफ और बॉर्डर गार्ड बांग्लादेश के बीच एक फ्लैग मीटिंग हुई। हर साल दुर्गा मूर्तियों का विसर्जन इच्छामती नदी में होता है। हर साल की तरह इस साल भी मूर्तियों का विसर्जन इसी नदी में किया जाएगा। यह नदी दोनों देशों के टूरिस्टों के लिए खास जगह है। जिसको देखते हुए यह फ्लैग मीटिंग आयोजित की गई।मीटिंग का मकसद यह सुनिश्चित करना था कि विसर्जन शांति से हो और कोई दिक्कत न आए। 1970 के दशक से भारत और बांग्लादेश विसर्जन के लिए सीमा खोलते हैं। कोलकाता से लगभग 70 किलोमीटर दूर, हर साल उत्तर 24 परगना जिले में इस आयोजन को देखने के लिए हजारों लोग इकट्ठा होते हैं। पिछली साल, सीमा के दोनों ओर से 55 दुर्गा मूर्तियों को नदी में विसर्जित किया गया था। लगभग 11,500 लोग नावों में बैठकर इस रस्म में शामिल हुए थे।बीएसएफ और बीजीबी के बीच यह मीटिंग एक जहाज पर हुई। जिसमें दोनों देशों के अधिकारियों ने सीमा पार से होने वाली घटनाओं को रोकने के लिए योजनाएं बनाईं। उन्होंने तय किया कि नदी की सीमा को नावों और रस्सियों से साफ तौर पर दिखाया जाएगा। दोनों सेनाएं ड्रोन और सीसीटीवी कैमरों से निगरानी रखेंगी। मीटिंग का मुख्य उद्देश्य सीमा सुरक्षा को बनाए रखना और विसर्जन को बिना किसी अप्रीय घटना हुए संपन्न कराना है। दोनों देशों की तरफ से सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए गए हैं।

संवाद हीनता : परिवार और समाज की चुनौती

डॉ सत्यवान सौरभ

आज का समय बहुत तेजी से बदल रहा है। तकनीकी प्रगति और व्यस्त जीवनशैली ने हमारे जीवन को सुविधाजनक बनाया है, लेकिन इसके साथ ही एक गंभीर समस्या भी सामने आई है संवाद हीनता। संवाद हीनता का अर्थ है बातचीत और विचारों के आदान-प्रदान की कमी। यह केवल शब्दों की कमी नहीं है, बल्कि एक ऐसी स्थिति है जिसमें लोग अपनी भावनाओं, समस्याओं और अनुभवों को साझा नहीं कर पाते। परिवार, मित्रता और समाज सभी पर इसका गहरा असर पड़ता है।परिवार जीवन का वह आधार है जहां बच्चे और बड़े अपने अनुभव साझा करते हैं और आपसी समझ विकसित करते हैं। लेकिन आज, व्यस्त जीवन, डिजिटल साधनों का अधिक प्रयोग और पीढ़ियों के अंतर ने पारिवारिक संवादिता को कमजोर कर दिया है। माता-पिता अपने काम और जिम्मेदारियों में इतने व्यस्त रहते हैं कि बच्चों के साथ समय बिताना मुश्किल हो जाता है। वहीं, बच्चे स्कूल, कोचिंग और मोबाइल की दुनिया में उलझे रहते हैं। परिणामस्वरूप, घर में बैठकर खुलकर बातचीत करना लगभग कम होता जा रहा है।डिजिटल दुनिया ने जीवन को आसान बनाया है, लेकिन इसके दुष्परिणाम भी हैं। स्मार्टफोन, टीवी और सोशल मीडिया ने परिवार के सदस्यों को एक-दूसरे से दूर कर दिया है। युवा सदस्य अधिक समय इन माध्यमों में व्यतीत करते हैं और आमने-सामने संवाद कम हो जाता है। ऐसे संवाद अक्सर सतही हो जाते हैं और भावनाओं की गहराई को व्यक्त नहीं कर पाते।पीढ़ियों का अंतर भी संवाद में बाधा डालता है। बुजुर्ग अनुभव और परंपरा पर भरोसा करते हैं, जबकि युवा आधुनिक दृष्टिकोण और स्वतंत्रता की ओर अधिक झुकाव रखते हैं। यह अंतर कभी-कभी परिवार में गलतफहमी और असहमति को जन्म देता है। छोटे-छोटे झगड़े या आलोचना भी भावनात्मक दूरी बढ़ा देती है और परिवार में मानसिक तनाव उत्पन्न करती है।संवाद हीनता केवल परिवार तक सीमित नहीं है। समाज में भी लोग अपनी राय, शिकायत या सुझाव साझा नहीं करते। इससे सहयोग और सामूहिक प्रयास कमजोर पड़ते हैं और गलतफहमियां बढ़ती हैं। उदाहरण के लिए, यदि किसी मोहल्ले में सफाई या सुरक्षा संबंधी समस्या को मिलकर लोगों को खुलकर संवाद करने से रोकते हैं। इस के नकारात्मक प्रभाव व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामाजिक स्तर पर दिखाई देते हैं। व्यक्ति में अकेलापन और मानसिक तनाव बढ़ता है, आत्मविश्वास कमजोर पड़ता है। परिवार में विश्वास और समझ की कमी होती है। समाज में सहयोग और सामूहिक प्रयास कम हो जाते हैं।इस समस्या को दूर करने के लिए कुछ उपाय अपनाए जा सकते हैं। सबसे पहले, नियमित संवाद का समय निर्धारित करना जरूरी है। परिवार के साथ भोजन, चाय या वीकेंड पर बातचीत को प्राथमिकता दी जा सकती है। दूसरी महत्वपूर्ण बात है सुनने और समझने की आदत। आलोचना से बचकर, एक-दूसरे की बात ध्यानपूर्वक सुनना और समझना संवादिता को बढ़ाता है।

आज के व्यस्त और डिजिटल जीवन में संवादहीनता परिवार और समाज की बड़ी चुनौती बन गई है। बातचीत की कमी भावनात्मक दूरी, गलतफहमियां और मानसिक तनाव बढ़ाती है। परिवार में बच्चे और बड़े एक-दूसरे की भावनाओं को साझा नहीं कर पाते, जबकि समाज में सहयोग और सामूहिक प्रयास कमजोर पड़ते हैं। इसका समाधान नियमित संवाद, साझा गतिविधियां, सकारात्मक सुनना और डिजिटल सीमाएं तय करना है। संवादिता केवल बातचीत नहीं, बल्कि विश्वास, समझ और संबंधों की नींव है। इसे प्राथमिकता देकर हम परिवार और समाज को मजबूत और भावनात्मक रूप से स्वस्थ बना सकते हैं।

तीसरी बात है साझा गतिविधियों का महत्व। खेल, यात्रा, हॉबीज़ या सामाजिक कार्यों में परिवार और दोस्तों को शामिल करने से संवाद प्राकृतिक रूप से बढ़ता है।डिजिटल उपकरणों का संतुलित उपयोग भी जरूरी है। मोबाइल और टीवी से समय निकालकर आमने-सामने बातचीत को प्राथमिकता देना चाहिए। साथ ही, अपनी भावनाओं को खुलकर व्यक्त करना भी आवश्यक है। डर या शर्म के कारण अपनी भावनाओं को दबाना संवादिता को और कमजोर करता है। बच्चों को भी अपनी भावनाएं व्यक्त करने के लिए प्रेरित करना चाहिए।संक्षेप में, संवादिता जीवन का वह आधार है जो रिश्तों, विश्वास और सहयोग को मजबूत करती है। संवाद हीनता केवल बातचीत की कमी नहीं है, बल्कि परिवार और समाज की संरचना को प्रभावित करने वाली गंभीर समस्या है। इसे समय रहते पहचानना और समाधान करना आवश्यक है। खुली बातचीत, सकारात्मक सुनना और साझा गतिविधियां न केवल परिवार और समाज को मजबूती देती हैं, बल्कि व्यक्तिगत विकास और मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी अत्यंत आवश्यक हैं।आज की चुनौती यह है कि हम अपनी व्यस्तता, डिजिटल साधनों और पीढ़ियों के अंतर के बावजूद संवादिता को प्राथमिकता दें। संवादिता ही वह माध्यम है जो हमें एक-दूसरे के करीब लाती है, समझ को गहरा करती है और समाज में सामूहिक सहयोग को बढ़ावा देती है। परिवार और समाज तभी सशक्त रह सकते हैं जब संवादिता मौजूद हो और इसे बढ़ावा दिया जाए। यही हमारी सबसे बड़ी आवश्यकता और जिम्मेदारी है।

60 करोड़ की धोखाधड़ी मामले में ईओडब्ल्यू कर सकती है पूछताछ

बढ़ सकती हैं शिल्पा की मुश्किलें

मुंबई : बॉलीवुड एक्ट्रेस शिल्पा शेट्टी जाने-अनजाने किसी ना किसी विवाद का हिस्सा बन ही जाती हैं। अब एक्ट्रेस राज कुंद्रा की 60 करोड़ रुपए की धोखाधड़ी मामले में मुसीबत में फंसती नजर आ रहीं हैं। उनसे 15 करोड़ रुपए के लेन-देन को लेकर सवाल-जवाब किए जा सकते हैं।

एक्ट्रेस को जल्द ही इस केस की इनवेस्टिगेशन कर रहे मुंबई पुलिस की आर्थिक अपराध शाखा (ईओडब्ल्यू) की तरफ से समन किया जा सकता है और इस धोखाधड़ी को लेकर पूछताछ की जा सकती है। राज कुंद्रा की 60 करोड़ रुपए की धोखाधड़ी के मामले में नया मोड़ सामने आया है।

इस मामले में अब शिल्फा शेट्टी का नाम भी सीधे तौर पर जुड़ता नजर आ रहा है। रिपोर्ट्स में ऐसा सुनने में आया

है कि राज कुंद्रा ने इन 60 करोड़ रुपए में से 15 करोड़ रुपए अपनी पत्नी और एक्ट्रेस शिल्पा शेट्टी की कंपनी के बैंक खाते में सबमिट किए थे। अब इस मामले में ही शिल्पा से पूछताछ की तैयारी चल रही है। सूत्रों की मानें तो मुंबई पुलिस की आर्थिक अपराध शाखा (ईओडब्ल्यू) इस मामले में कभी भी शिल्पा शेट्टी को समन कर सकती है और अपनी पूछताछ को आगे बढ़ा सकती है।इस इंक्वायरी के पीछे तर्क ये दिया जा रहा है कि किसी भी साधारण विज्ञापन के लिए इतना कपड़ा ट्रॉन्सफर नहीं किया जा सकता है। ऐसे में इस बात का पता लगाना जरूरी हो गया है कि अचानक से 15 करोड़ रुपए ट्रॉन्सफर करने का क्या मतलब था और इसके पीछे का उद्देश्य क्या था। ऐसे में शिल्पा को कुछ तीखे सवालों का भी सामना करना पड़ सकता है। एकता कपूर-बिपाशा बसु से पूछताछइससे पहले 60 करोड़ की धोखाधड़ी के मामले में राज कुंद्रा से लंबी पूछताछ की गई थी।

इसके बाद बालाजी टेलिफिल्म्स की प्रोड्यूसर एकता कपूर से भी पूछताछ का नाम सामने आया था। उनके साथ ही बॉलीवुड एक्ट्रेस नेहा धुपिया और बिपाशा बसु से भी पूछताछ की बात सामने आई थी। उनपर आरोप था कि राज कुंद्रा और शिल्पा शेट्टी की इस कंपनी में इन वेल नोन पर्सनालिटीज ने भी अपने प्रोडक्ट्स का प्रमोशन किया था।

सलमान खान का रियलिटी शो बिग बॉस 19 फंसा कानूनी पचड़े में

बिना इजाजत गाने का इस्तेमाल करने पर पीपीएल ने मांगे 2 करोड़

मुंबई : सलमान खान का विवादास्पद रियलिटी शो बिग बॉस 19 कानूनी पचड़े में फंसता हुआ नजर आ रहा है। वैसे तो ये शो अपने कंटेस्टेंट्स और उनके विवादों के चलते सुर्खियों का हिस्सा बना रहता है, लेकिन इस बार ये शो मेकर्स की भूल के चलते चर्चा का हिस्सा बना हुआ है। भारत की सबसे पुरानी कॉपीराइट लाइसेंसिंग संस्था, फोनोग्राफिक परफॉर्मेंस लिमिटेड (पीपीएल) ने शो के मेकर्स को कॉपीराइट म्यूजिक के अनाधिकृत इस्तेमाल का आरोप लगाते हुए कानूनी नोटिस जारी किया है।नोटिस के अनुसार, बिग बॉस के चल रहे 19वें सीजन में अग्निपथ (2012) से 'चिकनी चमेली' और गोरी तेरे प्यार में (2013) से 'धत तेरी की' गाने 3 सितंबर, 2025 को स्ट्रीम होने वाले एपिसोड 11 में दिखाए गए थे। पीपीएल इंडिया का दावा है कि मेकर्स ने पब्लिक परफॉर्मेंस लाइसेंस के बिना इन ट्रैक्स का इस्तेमाल किया है।पीपीएल की ओर से वकील हितेन अजय वासन द्वारा 19 सितंबर को जारी किया गया यह नोटिस, बिग बॉस के प्रोडक्शन हाउस एंडेमोल शाइन इंडिया, उसके निर्देशकों थॉमस गौसेट, निकोलस चज़ारैन और दीपक धर को ज़िम्मेदार पक्षकार बनाता है। रिपोर्ट के मुताबिक दोनों गानों का लाइसेंस सोनी म्यूज़िक एंटरटेनमेंट इंडिया के पास है, जो उन 450 से ज़्यादा म्यूज़िक लेबल्स में से एक है जिनके पब्लिक परफ़ॉर्मेंस राइट्स का प्रबंधन विशेष रूप से पीपीएल द्वारा किया जाता है।मेकर्स पर लगाया कॉपीराइट का आरोपऑर्गेनाइजेशन का तर्क है कि चूंकि एंडेमोल शाइन इंडिया ने कॉपीराइट अधिनियम, 1957 की धारा 30 के तहत आवश्यक लाइसेंस प्राप्त नहीं किया था, इसलिए यह कृत्य जानबूझकर किया गया उल्लंघन है। नोटिस में ने 2 करोड़ के हर्जाने के साथ-साथ आवश्यक लाइसेंस शुल्क की भी मांग की है। संगठन ने एक आदेश भी जारी किया है, जिसमें मेकर्स को बिना उचित अनुमति के उसकी ध्वनि रिकॉर्डिंग का उपयोग करने से रोक दिया गया है।

कल्कि 2 से बाहर कर दी गईं एक्ट्रेस दीपिका

फीस बढ़ाने की मांग पर मेकर्स से हुआ था विवाद

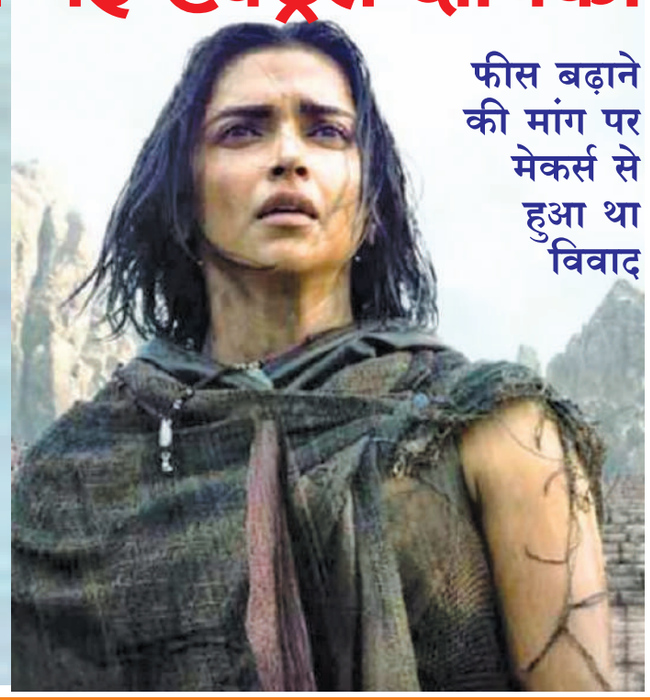

मुंबई : एक्ट्रेस दीपिका पादुकोण इन दिनों खबरों में बनी हैं। उन्हें फिल्म कल्कि 2898 एडी के सीक्वल से बाहर कर दिया गया है। रिपोर्ट्स हैं कि दीपिका 7 घंटे की शिफ्ट, फीस बढ़ाने की डिमांड और 25 लोगों के स्टाफ के लिए फाइव स्टार होटल में अरेंजमेंट्स चाहती थीं। अब खबरें हैं कि दीपिका ने इस फिल्म के लिए 20 दिन की शूटिंग भी कर ली थी।दीपिका ने कर ली थी 20 दिन की शूटिंगमीडिया की खबर के मुताबिक, दीपिका ने कल्कि 2898 एडी सीक्वल के लिए 20 दिन की शूटिंग कर ली थी। इसके बाद उन्होंने फीस बढ़ाने की मांग की थी। प्रोडेक्शन हाउस के सोर्स के हवाले से लिखा-दीपिका पादुकोण ने फीस बढ़ाने की डिमांड की थी। उन्हें 25 परसेंट से ज्यादा फीस चाहिए थी। उन्हें ये विश्वास था कि उन्हें कोई रिप्लेस नहीं कर सकता है। लेकिन टर्निंग प्वॉइंट तब आया जब मैनेजमेंट ने उनकी डिमांड को पूरा नहीं किया।आगे लिखा-दीपिका को पहले से ही सीक्वेल के बारे में पता था। वो जानती थी कि उनके लिए रोल परफॉर्मेंस बेस्ड क्रिएट किया जा रहा है। उन्होंने पार्ट 2 के लिए 20 दिन की शूटिंग पहले ही कर ली थी। डायरेक्टर नाग अश्विन ने खुद इसके बारे में बताया था। उनका अगला शेड्यूल आपसी बातचीत के बाद ही तय होना था। तो डेट क्लैश के दावे सच नहीं हैं।दूसरी तरफ, दीपिका या उनकी टीम की तरफ से इन सब खबरों कोई भी रिएक्शन नहीं आया है।कल्कि के मेकर्स ने की थी अनाउंसमेंट बता दें कि कल्कि 2898 एडी के मेकर्स ने सोशल मीडिया पर लिखा था-दीपिका पादुकोण अब कल्कि 2898 एडी के दूसरे पार्ट का हिस्सा नहीं हैं। हमने अपने रास्ते अलग कर लिए हैं। फर्स्ट फिल्म को बनाने की लंबी जर्नी के बाद, हम अब उनके साथ पार्टनरशिप नहीं बना पा रहे हैं। कल्कि जैसी फिल्म कमिटमेंट मांगती है। हम दीपिका के लिए अच्छे भविष्य की कामना करते हैं। बता दें कि दीपिका को इससे पहले फिल्म स्पिरिट से भी निकाला गया था। ,अब वो शाहरुख खान की किंग में काम कर रही हैं।

अजब-गजब

बच्चे के टूटी-फूटी साइकिल चलाने के तरीके ने किया हैरान

कहते हैं कि आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है। भारतीय तो इस मामले में नंबर-1 हैं। उनकी जरूरतें ऐसे-ऐसे जुगाड़ निकालने में कारगर साबित होती है कि जब दुनिया उसे देखती है तो हैरान हो जाती है। हाल ही में एक बच्चे का वीडियो वायरल हो रहा है जो साइकिल से स्कूल आता है। मगर उसकी टूटी-फूटी साइकिल देखकर लोगों को लग सकता है कि वो चलती नहीं होगी। हालांकि, बच्चे ने उसे चलाने के लिए ऐसा जुगाड़ निकाला कि उसके मास्टर जी भी चौंक गए और उसका वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर पोस्ट किया।इंस्टाग्राम यूजर विनय कुमार सिंह () सीतापुर जिले के दुघरा गांव में प्राथमिक विद्यालय के सहायक अध्यापक हैं। वो सोशल मीडिया पर अक्सर बच्चों के हुनर से जुड़े वीडियोज पोस्ट करते हैं। हाल ही में उन्होंने एक लड़के का वीडियो पोस्ट किया जो लोगों को बहुत पसंद आया। इस वीडियो में वो एक बच्चे के जुगाड़ को दिखा रहे हैं। जो जुगाड़ से ज्यादा उसके हुनर को भी दिखाता है।बच्चे का नाम मोहम्मद ज़ैद है जो कक्षा 2 का छात्र है। बच्चे के पास एक साइकिल है जिसका आधा हैंडल टूटा है, सीट नहीं है, ब्रेक नहीं हैं, साइकिल में मडगार्ड तक नहीं है। इसके बावजूद बच्चा उस साइकिल को चलाकर स्कूल तक आता है। टीचर ने बच्चे से कहा कि वो साइकिल चलाकर सबको दिखाए और बताए कि वो ब्रेक कैसे मारता है। बच्चा बड़े आराम से सीट पर बैठा और एक हाथ से हैंडल और दूसरे हाथ से साइकल के ऊपरी हिस्से को पकड़ा। उसके बाद पैडल मारने लगा। जब उसे साइकिल रोकनी थी तो उसने पैरों से टायर को तेजी से दबा लिया जिससे साइकिल रुक गई। विनय ने वीडियो पोस्ट करते हुए लिखा-यह प्रतिभा प्राथमिक विद्यालय के छात्रों में ही पाई जा सकती है, अल्प एवं बिना सुविधा के कैसे मैनेज कर लेते हैं?

जंगल में दिखा अजीब सा जीव

सांप जैसा मुंह, छोटी पूंछ और नीली जीभ

दुनिया भर के जंगलों में जीव-जंतुओं की अनगिनत प्रजातियां हैं, जिनमें से कईयों के बारे में हम जानते हैं तो कई ऐसी भी प्रजातियां हैं, जिन्हें देखकर लगता है कि ये तो बड़ा ही अजीब जीव है। ऐसे ही एक अजीब से दिखने वाले जीव का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। इस जीव का मुंह सांप जैसा है, पूंछ बेहद छोटी है और सबसे खास बात कि इसकी जीभ नीली है। वीडियो सामने आते ही लोग हैरान-परेशान हो गए हैं और लगातार अनुमान लगाने में लगे हुए हैं कि आखिर ये कौन-सा जीव है।वीडियो में देख सकते हैं कि जंगल में सूखे पत्तों के ऊपर कैसे एक अनोखा जीव बैठा हुआ है। उसका मुंह किसी सांप से मेल खाता है, लेकिन शरीर की बनावट छिपकली जैसी

लगती है। फिर जैसे ही कैमरा करीब आता है, वो अचानक अपनी नीली जीभ बाहर निकालता है। इस पल को देखकर सोशल मीडिया यूजर्स हैरान हैं और किसी ने इसे सांप की प्रजाति बताया है तो किसी का कहना है कि ये छिपकली की कोई दुर्लभ प्रजाति हो सकती है।जानकारी के मुताबिक, अजीब का दिखने वाला ये जीव ब्लू-टंग स्किंक नाम की छिपकली है, जो ऑस्ट्रेलिया और एशिया के कुछ हिस्सों में पाई जाती है। इसकी सबसे खास पहचान है इसकी चमकीली नीली जीभ, जिसे यह खतरा महसूस होने पर बाहर निकालकर दुश्मन को डराने की कोशिश करती है। दूर से देखने पर ये सांप जैसा लगती है, लेकिन असलियत में ये छिपकली की एक प्रजाति है। इसकी पूंछ छोटी और शरीर भारी-भरकम होता है।

पैसा तो जमा किया लेकिन खर्च नहीं किया

यह चीन के एक व्यक्ति की दुखद कहानी है। दो हज़ार साल पहले, एक व्यक्ति ने बहुत सारा पैसा जमा किया था। फिर... वह व्यक्ति मर गया, लेकिन पैसा कभी खर्च नहीं हुआ। सिक्कों की जांच से पता चला कि वो 2,000 साल पुराने हैं।

गांव के लड़के ने घर में ही बना डाला रॉकेट

उड़ने पर मच गया धमाल

क्या आपने कभी सोचा है कि रॉकेट जैसी चीज भी कोई अपने घर में बना सकता है? नहीं ना, लेकिन एक छोटे से गांव के रहने वाले एक 18 साल के लड़के ने यह सच कर दिखाया। जब उसने अपने खुद के बनाए रॉकेट को लॉन्च किया, तो देखकर वैज्ञानिक भी सोच में पड़ गए कि आखिर यह बच्चा कौन है?यहां बात हो रही है चीन के हुनान प्रांत के रहने वाले झांग शिजीए की, जिसने अपनी बहन का पुराना लैपटॉप ठीक करके और इंटरनेट से

मिली जानकारी की मदद से घर बैठे ही असली रॉकेट बना डाला।मीडिया में छपी एक रिपोर्ट के अनुसार, शिजीए ने सूअर के बाड़े से नाइट्रेट निकालकर ईंधन बनाया और फिर धीरे-धीरे 3डी प्रिंटर की मदद से रॉकेट के लिए पार्ट्स तैयार किए। जब उसने जून 2023 में खुद का बनाया रॉकेट लॉन्च किया था, तो पूरे देश में इसकी चर्चा हुई थी।शिजीए जब सिर्फ 14 साल का था, तब उसने टीवी पर पिता के साथ पहली बार रॉकेट लॉन्च देखा था। तभी उसने ठान लिया कि एक दिन वह खुद का रॉकेट बनाएगा। गांव में कोई लैब न होने की वजह से शिजीए ने डौयिन (चाइनीज टिकटॉक) पर साइंटिफिक एक्सपेरिमेंट वाले वीडियोज देखने शुरू किए।बता दें कि कड़ी मेहनत और 100 नाकाम कोशिशों के बाद शिजीए ने आखिरकार चार तरह के इंजन, कई सिंगल और टू-स्टेज वाला एक रॉकेट बनाया, जो 400 मीटर तक उड़न भरने में कामयाब रहा।शिजीए के इस कारनामे को देखकर उसके स्कूल ने उसे आर्थिक मदद दी और एक क्लासरूम को उसके लिए लैब में बदल दिया। रिपोर्ट के अनुसार, शिजीए को चीन की मशहूर शेनयांग एयरोस्पेस यूनिवर्सिटी में एयरोस्पेस इंजीनियरिंग में एडमिशन मिल गया है। इस लड़के का सपना दिखाता है कि अगर कुछ करने का जुनून हो तो, कोई भी सपना छोटा नहीं होता।